ISSN (P) : 0976-5255
(e) : 2454-339X
Impact Factor : 7.760 (SJIF)

शोध मंथन

A Peer Reviewed & Refereed International Journal

Vol. - XII No.- 1 Jan -Mar. 2021

Editor:
Dr (Capt.) Anjula Rajvanshi

JOURNAL ANU BOOKS
Delhi Meerut
www.anubooks.com

10. जनपद फर्रूखाबाद के ग्रामीण क्षेत्र में कृषि विकास स्तर की भौगोलिक विवेचना
महेन्द्र कुमार 69
11. मानव स्वास्थ्य एवं आयुर्वेद
डॉ0 पूनम लखनपाल 78
12. परिवर्तनशील समाज में उपेक्षित वृद्धजनः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन
डॉ0 अंचल गुप्ता, स्वाति सक्सेना 85
13. कला और संगीत
डॉ0 किरन शर्मा 90
14. सहकारी बैंकों में अतिदेय के उत्तरदायी तत्व एवं सुझाव
डॉ0 रूचि रानी, डॉ0 भूदेव सिंह 96
15. जनपद बिजनौर में रोजगार की स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन
डॉ0 वन्दना राजपूत, डॉ0 एस.के. राजपूत 101
16. हिन्दी भक्ति काव्य में सांसारिक बंधन और उनसे मुक्ति के निर्दिष्ट उपायः
डॉ. वजिरा गुणसेन 108
17. संगीतः एक योग क्रिया
सरिता 115
18. संगीत में कलाकार व श्रोता की भूमिका
रूकैय्या 119
19. कौशल विकास पर नगरीयवृद्धिकरण का प्रभाव
डॉ0 अपर्णा तिवारी 122
20. निचले राप्ती बेसिन के बाढ़ मैदान में बाढ़ जोखिम का आकलनः एक भौगोलिक विश्लेषण
मंजेश कुमार 127
21. भारतीय दर्शनों में कर्म का स्वरूप/कर्मसिद्धान्त
डॉ0 रूचिका जैन 133
22. जम्मू कश्मीर पुनर्गठन विधयक, 2019: जम्मू कश्मीर समस्या का एक सशक्त प्रयास
पुष्पा कुमारी 140
23. कोविद १९ काल में लोगो के जन जीवन पर क्या हुआ असर
श्रीमती सोनल उमेश पाटिल 149

मानवस्वास्थ्य एवं आयुर्वेद

प्राप्ति: 03.02.2021
स्वीकृत: 05.03.2021

डॉ0 पूनम लखनपाल
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्षा, संस्कृत विभाग,
आर0जी0 पी0जी0 कॉलेज,मेरठ
Email: dr.poonamlakhanpal@gmail.com

सारांश

स्वस्मिन् तिष्ठति इति स्वस्थः। स्वस्मिन् स्थितेर्भावः स्वास्थ्यम्। अपना, आत्मा, प्रकृति, सम्पत्ति सम्बन्धी अर्थ को प्रतिपादित करने वाले 'स्व' शब्द से बना स्वास्थ्य शब्द यहाँ प्रसंगतः 'नीरोग' एवं 'रोगों का अभाव' अर्थ में प्रयुक्त है। इसका अभिप्राय शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक सभी स्वास्थ्य से है। सबका मूल शरीर है। वही पुरुषार्थ चतुष्टय का साधन है अतः स्वास्थ्यरक्षा मनुष्य का प्रथम कर्त्तव्य है।

संस्कृतवाङ्मय प्राचीनतम ज्ञानकोश है अतः किसी भी चिन्तनीय, विचारणीय विषय का मूल संस्कृतवाङ्मय में, विशेष रूप से वेदों में खोजने का प्रयास किया जाता है। कोविड–19 महामारी के प्रतिरोध हेतु, उससे सुरक्षा हेतु संस्कृतवाङ्मय में वर्णित मानव स्वास्थ्य, जीवन शैली, रोगनिदान, उपचार, औषधि, आचार एवं आहार आदि का पुनरीक्षण स्वाभाविक है।

'जीवेम शरदः शतम्' की कामना करने वाले वैदिक ऋषियों ने आयुर्वेद की रचना की। आयुर्वेद विश्व का प्रथम एवं अद्भुत चिकित्सीय शास्त्र है, स्वास्थ्य का विज्ञान है। शरीर, इन्द्रिय, मन और आत्मा के संयोग को आयु कहते हैं। धारि, जीवित, नित्यग और अनुबन्ध इसके पर्याय हैं। जिस शास्त्र में हित, अहित, सुख, दुःख, आयु, उसके लिए हितकर और अहितकर (द्रव्य, गुण, कर्म), आयु का प्रमाण तथा उसका स्वरूप कहा गया है –उसका नाम आयुर्वेद है।

आयुर्वेद का प्रयोजन स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा तथा रोगी का रोगोपचार, रोगनिवारण है। आयुर्वेद के आठ अंग स्वीकार किये गए हैं – शल्य, शालाक्य, कायचिकित्सा भूतविद्या, कौमारभृत्य, अगदतन्त्र, रसायन तन्त्र तथा वाजीकरण'। इन आठ अंगों के विषयविवेचन द्वारा आयुर्वेद आयुपर्यन्त मनुष्य के स्वस्थ रहने की व्यवस्था का प्रयास करता है।

मुख्य शब्द : मानवस्वास्थ्य एवं आयुर्वेद।

प्रस्तावना

स्वस्मिन् तिष्ठति इति स्वस्थः। स्वस्मिन् स्थितेर्भावः स्वास्थ्यम्। अपना, आत्मा, प्रकृति, सम्बन्धी अर्थ को प्रतिपादित करने वाले 'स्व' शब्द से बना स्वास्थ्य शब्द यहाँ प्रसंगतः ...गों का अभाव' अर्थ में प्रयुक्त है। स्वास्थ्य का अभिप्राय मात्र शरीर से ही सम्बद्ध

नहीं है, अपितु शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक सभी स्वास्थ्य से भी है। सबका मूल शरीर ही है अतः उसका स्वास्थ्य विविध स्वास्थ्यों का आधार है। वही सभी वस्तुओं की प्राप्ति का मूल कारण है 'सर्वस्य मूलं मानुष्यं तथा सर्वार्थसाधनम्।' यही शरीर पुरुषार्थ चतुष्टय का साधन है–

'धर्मार्थकाममोक्षाणां मूलमुक्तं कलेवरम्।
तच्च सर्वसिद्ध्यै भवेद्यदि निरामयम्।।

अतः शरीर को समस्त धर्मसाधनों में प्रथम माना गया है। संस्कृत में 'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्'[2] कहा गया तो लोकव्यवहार की भाषा में 'पहला सुख निरोगी काया' कहा गया अतएव स्वास्थ्यरक्षा मनुष्य का प्रथम कर्त्तव्य है –

सर्वमन्यत् परित्यज्य शरीरमनुपालयेत्।
तदभावे हि भावानां सर्वाभावः शरीरिणाम्।।[3]

संस्कृतवाङ्मय वह अथाह सागर है, जिसमें सभी विषयरत्नों की प्राप्ति सम्भव है, किसी भी चिन्तनीय, विचारणीय विषय का मूल संस्कृतवाङ्मय में, उसमें भी विशेष रूप से वेदों में खोजने का प्रयास किया जाता है। कोविड–19 महामारी के प्रतिरोध हेतु, उससे सुरक्षा हेतु संस्कृतवाङ्मय में वर्णित मानव स्वास्थ्य, जीवन शैली, रोगनिदान, उपचार, औषधि, आचार एवं आहार आदि का पुनरीक्षण स्वाभाविक है क्योंकि संस्कृतवाङ्मय में स्वास्थ्य हेतु जितने भी आयाम सम्भव है उनका विवेचन प्राप्त होता है।

हमारे वैदिक ऋषि 'जीवेम शरदः शतम्' की कामना स्वास्थ्य के साथ ही करते है क्योंकि 'आरोग्यं परमं भाग्यं स्वास्थ्यं सर्वार्थसाधनम्।' आयुर्वेद को ऋग्वेद अथवा अथर्ववेद का उपवेद मानने में मतैक्य नहीं है तथापि विश्व का प्रथम एवं अद्भुत चिकित्सीय शास्त्र आयुर्वेद ही है। आयुर्वेद स्वास्थ्य का विज्ञान है। आयुषः वेदः आयुर्वेदः। इण् गतौ धातु से उसि प्रत्यय लगकर आयु शब्द बनता है।

शरीरेन्द्रियसत्त्वात्मसंयोगो धारि जीवितम्।
नित्यगश्चानुबन्धश्च पर्यायैरायुरुच्यते।।[4]

शरीर, इन्द्रिय, मन और आत्मा के संयोग को आयु कहते है। धारि, जीवित, नित्यग और अनुबन्ध इसके पर्यायवाची हैं।

शरीर, इन्द्रिय, मन, आत्मा इन्हें परस्पर धारण करने का स्वभाव होने से आयु को 'धारि' कहते हैं। यावच्चेतन शरीर आयु के रहने से इसे 'जीवित' कहते हैं।[5] नित्य प्रतिक्षण गमनशील शिथिलीभाव होने से 'नित्यग' कहते है। अपरापर शरीर के साथ सम्बन्ध कराने के कारण इसे 'अनुबन्ध' कहते हैं।

वेद–विद् ज्ञाने, सत्तायाम्, विचारणे, चेतनाख्यानिवासेषु और विद्लृ लाभे धातु से निष्पन्न वेद शब्द ज्ञान, सत्ता, विचार, भान और प्राप्ति अर्थ का द्योतक है अतः आयु के विषय में ज्ञान प्राप्त कराने वाला **आयुर्वेद है – आयुरस्मिन् विद्यते अनेन वाऽऽयुर्विन्दति इत्यायुर्वेदः।**[6]

अनेन पुरुषो यस्मात् आयुर्विन्दति वेत्ति च।
तस्मान्मुनिवरैरेष आयुर्वेद इति स्मृतः।।

जिस शास्त्र मे हित, अहित, सुख, दुःख, आयु, उसके लिए हितकर और अहितकर (द्रव्य, गुण, कर्म), आयु का प्रमाण तथा उसका स्वरूप कहा गया है – उसका नाम आयुर्वेद है।

हिताहितं सुखं दुःखमायुस्तस्य हिताहितम्।
मानं च तच्च यत्रोक्तमायुर्वेदः स उच्यते।।[7]

वेदज्ञ पुरुषो ने इसे आयु का पुण्यतम वेद कहा है जो दोनों लोक अर्थात् इह लोक और परलोक मे हितकर है। यह अभ्युदय और निःश्रेयस दोनों को देने वाला है।[8] यह हिताहित के साथ व्याधि का निदान और शमन भी करता है –

आयुर्हिताहितं व्याधेर्निदानं शमनं तथा।
विद्यते यत्र विद्वद्भिः स आयुर्वेद उच्यते।।

आयुर्वेद सम्बन्धी तत्त्व सर्वप्रथम ऋग्वेद एवं अथर्ववेद में प्राप्त होते हैं। पुराणों एवं स्मृतियों मे शौचाचार के माध्यम से स्वास्थ्य का उपदेश प्राप्त होता है। भक्ष्याभक्ष्य, देहशुद्धि, द्रव्यशुद्धि, मनःशुद्धि तथा प्रायश्चित आदि से कर्मशुद्धि का निर्देश भी उपलब्ध है। रामायण, महाभारत तथा साहित्यिक ग्रन्थो मे भी आयुर्वेदिक चिकित्सीय तत्त्व दृष्टिगत होते हैं। चरक संहिता, सुश्रुत संहिता, आचार्य वाग्भट का अष्टांग हृदय, अष्टांग संग्रह, भावमिश्र का भावप्रकाश, आचार्य माधव का माधवनिदान, आचार्य शार्गधर की शार्गधर संहिता और शार्गधर पद्धति तथा इन ग्रन्थों पर अनेक टीकाएँ आयुर्वेद की परम्परा को पुष्ट करती हैं, जिनमें शरीर रचना विज्ञान से लेकर, रोग, रोगलक्षण, रोगपरीक्षा, रोगनिदान के विविध उपाय एवं पद्धति, औषध विज्ञान, शल्य चिकित्सा आदि का विस्तृत, प्रायोगिक एवं वैज्ञानिक विवेचन उपलब्ध होता है।

आयुर्वेद का प्रथम प्रयोजन स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा तथा रोगी का रोगोपचार, रोग निवारण है। प्रयोजनं चास्य स्वस्थस्य स्वास्थ्यरक्षणमातुरस्य विकारप्रशमनं च[9] आहार विहार और आचार का संतुलित प्रयोग स्वास्थ्य रक्षा के लिए आवश्यक है। यदि कदाचित् मिथ्या आहार विहार के कारण रोग उत्पन्न हो जाएँ तो उसका शमन करके पुरुष को स्वस्थ करना, प्राकृतभाव में स्थापित करना आयुर्वेद का द्वितीय प्रयोजन है।[10]

आयुर्वेद के आठ अंगो स्वीकार किये गए हैं – शल्य, शालाक्य, कायचिकित्सा भूतविद्या, कौमारभृत्य, अगदतन्त्र, रसायन तन्त्र तथा वाजीकरण। इन्हीं अष्टांगों में शल्य चिकित्सा, उसके उपकरण, विविध अंगों के रोग, शारीरिक एवं मानसिक रोग, कुमार (बालक) के रोग, धात्री, माता, पालन पोषण एवं चिकित्सा, सर्पकीट आदि के दंश से उत्पन्न विष तथा विविध विष एवं उनकी शान्ति के उपाय, रसायनों के माध्यम से आयुष्य–बल–बुद्धि की वृद्धि और रोगनिदान, सन्तानोत्पत्ति सम्बन्धी विविध विषयों का विस्तृत विवेचन प्राप्त होता है। इन आठ अगों के विषयविवेचन द्वारा

प्रकृति है। इस प्रकार अपनी प्रकृति मे स्थित रहने वाला स्वस्थ तथा उसका प्राकृतभाव स्वास्थ्य है। इसके विपरीत वैकृत भाव रोग है।

प्रकृतिस्थ व्यक्ति को प्रकृति के आठ रूप आरोग्य प्रदान करते है। प्रकृति के आठ रूप हैं – जल, अग्नि, होता, सूर्य, चन्द्र, आकाश, पृथ्वी और वायु। ये रूप यदि निर्मल, निर्दोष और स्वाभाविक हैं तो यह सम्पूर्ण जीव–जगत् स्वस्थ रहता है। इसी आयुर्वेदीय यथार्थ को कालिदास मे अष्टमूर्ति 'शिव' अर्थात् कल्याण की प्रार्थना से अभिव्यक्त किया है।[11]

आयुर्वेद के अनुसार स्वस्थ व्यक्ति का लक्षण है –

समदोषः समाग्निश्च समधातुमलक्रियः।
प्रसन्नात्मेन्द्रिय मनः स्वस्थ इत्यभिधीयते।।[12]

जिसके त्रिदोष (वात पित्त कफ) सम हों, जिसकी अग्नि–जठराग्नि (पाचनक्रिया) सम (ठीक) हो, जिसकी सप्त धातु (रस, रक्त, मांस, मेदा, अस्थि, मज्जा और शुक्र आदि) सम (ठीक निर्माण हो रहा) हो तथा दूषित पदार्थों (मल, मूत्र, स्वेद आदि) की विसर्जन क्रिया सम हो, इन्द्रियाँ आत्मा तथा मन प्रसन्न हो वह स्वस्थ है।

इस स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए आयुर्वेद त्रिदोषों को सम रखने, जठराग्नि को उचित रूप से उदीप्त करने (अधिक नहीं) धातुओं की उचित उत्पत्ति होने, विसर्जनप्रक्रिया को ठीक रखने की विस्तृत चर्चा करता है। शरीर के स्वस्थ होने पर मन प्रसन्न होता है और प्रसन्न मन से आत्मा प्रसन्न होती है। इसीलिए कहा जाता है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ आत्मा का निवास होता है।

मानव स्वास्थ्य के तीन आधार बताए गए हैं, आहार, निद्रा और ब्रह्मचर्य। स्वास्थ्य के लिए तीनों का ही अपना महत्त्व है किन्तु इसका प्रथम सोपान है आहार।

सुश्रुत के अनुसार आहारादेवाभिवृद्धिर्बलमारोग्यं वर्णेन्द्रियप्रसादश्च। ..... ह्याहारवैषम्यादस्वास्थ्यम्[13]

आहार ही से प्राणियों के शरीर की वृद्धि, बल, आरोग्य, वर्ण तथा इन्द्रियों की प्रस रहती है तथा आहार की विषमता से अस्वास्थ्य (रोग) उत्पन्न होता है।

आयुर्वेदशास्त्र में एक प्रश्नोतर प्राप्त होता है

कोऽरुक् कोऽरुक् कोऽरुक्।
हितभुक् मितभुक् ऋतभुक्।।

प्रश्न है रोगरहित कौन है? उत्तर है हिताहार, मिताहार और ऋत या ऋतु आ वाला। तीसरे पद के रूप में ऋत और ऋतु दोनों पद का प्रयोग मिलता है। हि कल्याणकारी, मित अर्थात् सीमित, उचित मात्रा में। ऋत का अर्थ है उचित प्रकार से अ ऋतु का अर्थ है उस ऋतु में उत्पन्न होने वाला।

SANSKRIT
DR. UPASANA SINGH

ISSN (P) : 0976-5255
(e) : 2454-339X
Impact Factor : 8.354 (SJIF)

शोध मंथन

A Peer Reviewed & Refereed International Journal

Vol. - XII No.- 2 April-June 2021

Editor:
Dr (Capt.) Anjula Rajvanshi

JOURNAL ANU BOOKS
Delhi Meerut
www.anubooks.com

ISSN: (P) : 0976-5255 (e) : 2454-339X
Impact Factor 8.354 (SJIF)

शोध मंथन

हिन्दी शोध पत्रिका

A Peer Reviewed & Refereed International Journal in Hindi

Vol. XII No. II April-June 2021

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan

अनुक्रमणिका

24 'पंजाब के कला सरताज'– प्रोफ़ेसर एस.एल. पराशर
डॉ0 कविता सिंह 157

25. स्वास्थ्य के संदर्भ में गाँधी दृष्टिः एक अवलोकन
डॉ. माईकल 164

26. कबीर : सामाजिक चेतना की यथार्थता
डॉ0 जितेन्द्र कुमार परमार 172

27. बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षाणर्थियों मे आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन
डॉ. किरण गिल 180

28. लॉकडाउन–प्राकृतिक पर्यावरण हेतु एक वरदान, भारत के सन्दर्भ में
डॉ0 बी0पी0 सिंह 185

29. उत्तराखण्ड राज्य के रामनगर नगर की बंजारा जनजाति का सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन व पलायन के कारणों का अध्ययन
डा0 सिराज अहमद, शादाब जहाँ 190

30. पुराणों में गंगा माहात्म्य (नास्ति गणसमा नदी)
डॉ0 उपासना सिंह 198

31. ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटन की सम्भावनाएँ
डा0 सीमा रानी 204

32. भारत – अमेरिका संबंध और रूस वर्तमान परिदृष्य
डॉ0 अमित कुमार गुप्ता 209

33. भारतीय सामुद्रिक क्षेत्रों की सुरक्षा व एशियाई तालमेल
डॉ0 माया गुप्ता 215

34. प्राथमिक स्तर पर परिषदीय एंव अन्य अंभिकरणों द्वारा संचालित विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन
डॉ0 निरंजन कुमार प्रजापति 220

शोध मंथन Vol. XII No.II April-June 2021 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: http://shodhmanthan.anubooks.com

पुराणों में गंगा माहात्म्य
(नास्ति गंगसमा नदी)

प्राप्ति : 02.04.2021

डॉ० उपासना सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग
आर०जी० (पी०जी०) कॉलेज, मेरठ
ईमेल: upasana312bhu@gmail.com

सारांश

गंगा, जिस पर अनगिनत बातें, अनगिनत किताबें कही और लिखी जाती हैं। दशकों [illegible] गंगाजल की स्थिति कैसी थी और अब कैसी है ये पूछने या बताने की आवश्यकता नहीं है।

वर्तमान में गंगा की अविरलता, सफाई एवं सुन्दरीकरण के लिए सरकार द्वारा कई प्रका[illegible] के विशेष कार्यक्रम चलाये जाते हैं। हाल ही में 'गंगा यात्रा' का आयोजन किया गया था। [illegible] साल के आये केन्द्रीय बजट में गंगा हेतु दोगुने से भी अधिक धनराशि आवंटित की गई है कि[illegible] सरकारी कागजों पर हर रोज साफ होने वाली गंगा वास्तविकता के धरातल पर प्रतिक्षण मैली हो[illegible] जा रही है। मीडिया एवं सोशल मीडिया में 'नमामि गंगे' पर जुबानी जंग लड़ने वाले नेतागण अ[illegible] घर की गन्दगी इसी में बहाते हुए संकोच नहीं करते हैं। पतित–पावन गंगा तट पर आज का [illegible] सेल्फी लेकर चिप्स के खाली पैकेट वहीं छोड़ आता है। ये तो है आज की गंगा लेकिन [illegible] वास्तव में गंगा प्राचीन समय में भी ऐसी थी? नहीं। लाखों वर्ष पूर्व भारतीय मनीषियों द्वारा [illegible] गंगा की अलौकिकता को सिद्ध कर दिया गया था उसे अब जाकर भारत सरकार ने भारती[illegible] संस्कृति की अमूल्य धरोहर माना है। सम्पूर्ण विश्व में माँ गंगा ही एक मात्र ऐसी नदी है जिसे [illegible] स्वरूप माना गया है। किन्तु वर्तमान में माँ गंगा की स्थिति सर्वविदित है। जीवंतता की प्रतीक [illegible] कई अनगिनत जीवधारियों के जीवन का एकमात्र आधार गंगा नदी सदियों से ही स्वयं में [illegible] इतिहास एवं संस्कृति को समेटे हुए है।

प्रस्तावना

सनातन हिन्दू धर्म में ईश्वर की सत्ता के अनन्तर धरती पर गंगा से बढ़कर कोई आरा[illegible] नहीं है। बौद्ध, जैन आदि सम्प्रदायों में भी गंगा की पवित्रता एवं आध्यात्मिक शक्ति की विशिष्टता को स्वीकार किया गया है। गंगा जल न केवल शारीरिक एवं भौतिक संतापों को शान्त करने वाला है प्रत्युत आन्तरिक एवं आध्यात्मिक शान्ति का अविनाशी बीज भी उसकी चंचल तरंगों में बहता चला आ रहा है। कोई भी हिन्दू उसे नदी के रूप में न तो देखता है न दूसरों के मुख से सुनना [illegible]ता है क्योंकि वह देवी एवं मातृ स्वरूपा है।

[illegible] वैज्ञानिक भले ही शीशी–बोतलों में भरकर नई–नई खोज करके यह सिद्ध करें कि उसमें [illegible] की औषधियों का विचित्र प्रभाव है जो उसके जल में कीटाणु नहीं पड़ते किन्तु धार्मिक [illegible] भी यह पुण्यसलिला भगवान् विष्णु के पद से निकलने के कारण समस्त ऐतिहासिक और [illegible] व्याधियों को हरने वाली बनी ही रहेगी। गंगा के तटवासियों को नये वैज्ञानिकों के इन [illegible] से कोई विशेष प्रेरणा नहीं मिली, वे तो अनादि काल से ही गंगा के दर्शन, पूजन, जलपान [illegible] अवगाहन से ही स्वयं की तृप्ति एवं मुक्ति को मानता आ रहा है और मानता रहेगा। प्रत्येक [illegible] हिन्दू का हृदय भी गंगा तट पर पहुँच कर अपूर्व भावनाओं से भर जाता है। भविष्य में [illegible] एवं तर्क के प्रचण्ड ताप में गंगा की धार्मिक एवं आध्यात्मिक चेतना का कुछ ह्रास हो भी [illegible] फिर भी इसके वैज्ञानिक महत्व की पताका उस युग में भी फहराती रहेगी। गंगा जल का [illegible] महत्व भी चमत्कारों से भरा है। कई वर्षों तक पड़े रहने पर भी अन्य नदियों के जल की [illegible] गंगा जल में कीड़े नहीं पड़ते। कुछ असाध्य रोगों को समूल नष्ट करने की क्षमता गंगाजल [illegible] में प्रसिद्ध है। कुष्ठ के सहस्त्रों रोगी प्रतिवर्ष गंगा का सेवन कर आरोग्य लाभ लेते हैं। इसी [illegible] राजयक्ष्मा, पुरानी संग्रहणी, अजीर्ण के अन्य असाध्य उपद्रव, जीर्ण ज्वर एवं दमा को दूर करने [illegible] विचित्र शक्ति स्वच्छ गंगा जल में है।

गंगा जल की इस विचित्रता से आकृष्ट होकर अनेक पाश्चात्य वैज्ञानिकों ने इसका शोध [illegible] किया और उन सब का भी यही मत है कि गंगाजल में सामान्य नदियों के जल से कई गुना [illegible] गुण है। इस प्रसंग में कुछ वर्ष पूर्व आगरा के सरकारी वैज्ञानिक विभाग के कर्मचारी मि० [illegible] की अन्वेषण कुछ विशेष मनोरंजक है। उक्त महोदय ने वाराणसी शहर के उस गंगा घाट [illegible] लिया जिसमें शहर के गन्दे नाले का पानी आकर गिरता था। आरम्भिक परीक्षण में उन्होंने [illegible] कि उस स्थल के गंगाजल में हैजे के लाखों बैक्टीरिया भरे हैं किन्तु छः घण्टे बाद ही उन्होंने [illegible] कि वे सब स्वयं ही मरकर नीचे बैठ गए और ऊपर गंगा का पवित्र जल लहराने लगा, इसी [illegible] उन्होंने कई संक्रामक रोगों के बैक्टीरिया गंगा जल में छोड़ा और छः घण्टे बाद देखा तो [illegible] मरे हुए पाये गये। जबकि अन्य नदियों के जलों में उन संक्रामक कीटाणुओं की संख्या [illegible] घण्टे में ही असंख्य हो गयी थी।

अन्यान्य पाश्चात्य वैज्ञानिकों के शोध परिणाम भी इसी प्रकार हैं सबने एक स्वर में मुक्त [illegible] से गंगाजल की प्रशंसा की तथा गंगा जल की अद्भुत शक्ति को स्वीकारा। प्राचीन भारतीय [illegible] का तो कहना ही क्या, उनकी गंगा महिमा सुनकर आज के लोग आश्चर्य करेंगे। मृत्यु के [illegible] रोगी के मुख में गंगाजल डालने की प्रथा आज भी है। साधारणतया लोग समझते हैं कि यह [illegible] प्राप्ति के लिए है, किन्तु गंगाजल में चेतना एवं शक्ति उत्पन्न करने के जो अमोघ गुण हैं [illegible] कारण भी यह प्रथा प्रचलित हुई होगी। कई पाश्चात्य डॉक्टरों ने प्रयोगों से तथा अनुभवों से [illegible] करके यह बताया है कि शरीर के शक्तिपुञ्ज जब जवाब देने लगते हैं, कार्यशक्ति विलुप्त हो [illegible] है, उस समय स्वच्छ गंगाजल का सेवन कराने से रोगी को पुनः शक्ति की प्राप्ति होगी। [illegible] लोगों द्वारा संस्तुत, दर्शित ध्यानावस्थित, पूजित इस अजस्रवाहिनी गंगधारा की समानता [illegible] की कोई नदी नहीं कर सकती।

भारत के सभी धर्मों एवं सम्प्रदायों के अनुयायियों ने गंगा का सम्मान आदर किया। शैव [illegible] भगवान शंकर की जटा में विराजमान गंगा को इष्टदेवी मानते हैं। शिवपुराण में गंगा की [illegible] महिमा का वर्णन किया गया है। इसी प्रकार वैष्णवों की दृष्टि में धरती पर गंगा से बढ़कर

कोई तीर्थ ही नहीं है। सभी वैष्णव ग्रन्थों में गंगा तथा गंगाजल की अगाध महिमा का वर्णन है। शाक्त सम्प्रदाय में भी गंगा को अनादि शक्ति का एक रूप मानकर परम आराध्य स्वीकार किया गया है। इसी प्रकार स्वामी शंकराचार्य, रामानुज, वल्लभाचार्य, रामानन्द, कबीर, तुलसी, चैतन्य महाप्रभु आदि आचार्यों तथा संतों ने तो गंगा जी को अपनी साधना का अविभाज्य अंग स्वीकार किया था। स्वामी शंकराचार्य ने अपने गंगाष्टक में कहा है –

विधिर्विष्णुः शम्भुस्त्वमसि पुरुषत्वेन सकला,
रमोमागीमुख्या त्वमसि ललना जह्नुतनये।
निराकाराऽगाधा भगवति! सदा त्वं विहरसि,
क्षितौ नीराकारा हरसि जनतासान्त्वकिपया।।[1]

अर्थात् हे जह्नुतनये! तुम पुरुष रूप में ब्रह्मा, विष्णु और महेश हो और स्त्री रूप में तुम्हीं उमा, रमा तथा सरस्वती का रूप धारण करने वाली हो, हे परम ऐश्वर्यशाली! तुम ही निराकार ब्रह्ममयी और नितान्त अपार महिमा वाली हो। इस धरती पर तुम जल का रूप धारण कर जनता के सन्तापों को अपनी कृपा से दूर करती हो।

गंगा की यह अगाध महिमा चिरकाल से वाङ्मयी भारतीय प्रतिभा को प्रेरणा देती रही है। अखिल वेदों एवं शास्त्रों के गूढ़तत्वों को प्रकाशित करने वाले दिव्य पुराण गंगा के माहात्म्य एवं कथाओं से पटे पड़े है। गंगा की पावन कथा एवं महिमा प्रायः सभी पुराणों में विस्तृत रूप से प्राप्त होती है। ब्रह्मपुराण एवं वृहन्नारदीय पुराण में तो अनेक अध्यायों में गंगा की ही चर्चा है। वृहन्नारदीय पुराण में नारद के पूछने पर कि पृथ्वी में सबसे उत्तम क्षेत्र तथा पुनीत तीर्थ कहाँ है इस पर सनक जी उत्तर देते है –

स्मृतार्तिनाशिनी गंगा नदीनां प्रवरा मुने।
सर्वपापक्षयकरी सर्वोपद्रवनाशिनी।।
सर्वतीर्थाभिषेकाणि यानि पुण्यानि तानि वै।
गंगाबिन्द्वभिषेकस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्।।
गंगा गंगेति यो ब्रूयाद्योजनानां शते स्थितः।
सोऽपि मुच्येत पापेभ्यः किमुगंगाभिषेकवान्।।
विष्णुपादोद्भवा देवी विश्वेश्वरशिरः स्थिता।
संसेव्या मुनिभिर्देवैः किं पुनः पामरैर्जनैः।।[2]

अर्थात् यह गंगा स्मरणमात्र से पीड़ा को दूर करने वाली है, सभी नदियों में श्रेष्ठ है, पापों को विनष्ट करने वाली है। विष्णु भगवान के चरणों से प्रकट हुई, विश्वेश्वर शिव के सिर पर स्थित भगवती गंगा का सेवन देवता इत्यादि भी करना चाहते हैं तो पामर मनुष्यों की तो बात ही क्या है। गंगा का स्नान भगवान विष्णु जैसा स्वरूप एवं पद देने वाला है। आगे इसी क्रम में गंगा महिमा को सनक जी कहते हैं –

नास्ति गंगासमं तीर्थं नास्ति मातृसमो गुरुः।
नास्ति मोक्षात्परो लाभो नास्ति गंगासमा नदी।[3]

संसार में पतितपावनी गंगा के समान कोई और नदी नहीं है। आगे कह रहे हैं पृथ्वी पर जितने भी तीर्थ हैं वो सब गंगा के कणमात्र की भी समानता नहीं कर सकते। तुलसी दल के बराबर भी गंगाजल इक्कीस पीढ़ियों को तारने वाला है।

पृथिव्यां यानि तीर्थानि पवित्राणि द्विजोत्तम्।
तानि सर्वाणि गंगायाः कणस्यापि समानि न।।
तुलसीदलसम्मिश्रमपि सर्षपमात्रकम्।
गंगाजलंपुनात्येव कुलानामेकविंशतिम्।।[4]

गंगा जल का दर्शन करने, स्तवन करने, भक्तिपूर्वक स्नान करने तथा गंगाजल का पान करने वालों को स्वर्ग, निर्मल ज्ञान, योग एवं मोक्ष इन सभी की प्राप्ति होती है।

गंगां पश्यति यः स्तौति भक्त्या पिबेज्जलम्।
स स्वर्गं ज्ञानममलं योगं क्षेमं च विन्दती।।[5]

इस जगत में वह मनुष्य श्रेष्ठ है जिसकी देह पर गंगाजल का एक कण भी गिर जाय तो वह मनुष्य महापातकों से मुक्त होकर परमपद को प्राप्त करता है –

गंगास्नानपुराणां तु वाञ्छितार्थफलप्रदः।
गंगाजलकणेनापि यः सिक्तो मनुजोत्तमः।।
सर्वपापविनिर्मुक्त प्रयाति परमं पदम्।।[6]

गंगा महिमा को बताते हुए आगे महर्षि वसु रानी मोहिनी से कह रहे हैं – अतुल ज्ञान, ऐश्वर्य, प्रतिष्ठा, दीर्घायु एवं शुभ कारक धर्म का पालन ये सब गंगा के दर्शन से ही प्राप्त होते हैं। इन्द्रियों की चंचलता, दुर्व्यसन, निर्दयता, कुटिलता, हिंसा, परकीय दोष, दम्भ ये सभी अवगुण श्रद्धाभाव से किए गए गंगा दर्शन से दूर हो जाती हैं।

ज्ञानमैश्वर्यमतुलं प्रतिष्ठायुर्यशस्तथा।
शुभानामाश्रमाणां च गंगादर्शन फलम्।।
सर्वेन्द्रियाणां चाञ्चल्यं व्यसनानि च पातकम्।
निर्घृणत्वं नश्यन्ति गंगादर्शन मात्रतः।।[7]

महारानी मोहिनी से आचार्य वसु कह रहे हैं कि अधिक क्या कहा जाय गंगा स्नान से बढ़कर स्नान न कभी भूतकाल में हुआ न भविष्यकाल में होगा विशेषतया कलियुग में यह जाह्नवी पापों की नष्टकारी है।

गंगा स्नानात् परं स्नानं न भूतं न भविष्यति।
विशेषतः कलियुगे पापं हरति जाह्नवी।[8]

नारद पुराण में आचार्य वसु द्वारा गंगा को समस्त संसार (चर–अचर) के विष का नाश करने वाली कहा है।

स्थाणुजंगमसंभूतविषहत्रि नमोऽस्तु ते।
संसारविषनाशिन्यै जीवनायै नमोनमः।।[9]

हजारों वर्ष पूर्व ऋषियों द्वारा पुराणों में कही गयी ये बात वर्तमान में भी सत्य सिद्ध हो रही है। शहर–गाँव, कारखाने इत्यादि दुनियाभर के विष (मैल–गन्दगी) को लोकपावनी गंगा ही स्वयं में समाहित कर रही किन्तु अब मनुष्यों के स्वार्थ की पराकाष्ठा ने सीमा लांघ दिया है। जिसका परिणाम हमारी आने वाली पीढ़ियों को भोगना पड़ेगा। विशालकाय नारदपुराण में आचार्य वसु एवं मोहिनी रुक्मांगद की कथा के प्रसंग में गंगा को कलयुग का एकमात्र सर्वोत्तम तीर्थ तथा इसके तटवर्ती पुण्यक्षेत्र को सद्गति प्रदान करने वाला कहा गया है।

गणातीरे वसेन्नित्यं गणतोयं पिबेत् सदा।
स पुमान् स विमुच्येत् पातकैः पूर्वसंचितैः।।[10]

स पुमान् स विमुच्येत पातकैः पूर्वसंचितैः भगवान विष्णु को ही द्रव्यरूप में गंगाजल हो जाने की बात कही गई
इस पुराण में स्वयं भगवान विष्णु को ही द्रव्यरूप में गंगाजल हो जाने की बात कही गई है। इसीलिए गंगाजल कभी पुराना एवं बासी नहीं होता नित्य नूतन एवं ताजा बना रहता है।

ब्रह्मवैवर्त पुराण के स्तुती खण्ड में गंगाध्यान तथा गंगस्तोत्र नामक अध्याय में विष्णु जाह्नवी के अनुपम मनोरम स्वरूप का वर्णन किया गया है। इसी महापुराण के प्रकृतिखण्ड नारद–नारायण संवाद में गंगोपाख्यान का विशद वर्णन किया गया है। स्कन्दपुराण के केदारखण्ड भगीरथोपाख्यान में सर्वलोकमयी गंगा के सहस्त्रों नाम उल्लिखित हैं। स्कन्दपुराण के ही काशीख में गंगादशहरा स्तोत्र का वर्णन किया गया है।

विभिन्न पुराणों में समाहित गंगा की महिमा के अतिरिक्त वेदवन्दित सुरेश्वरी गंगा की महि में सम्पूर्ण संस्कृत का श्रीक्षेत्र आच्छादित है। श्री शंकराचार्य विरचित गणस्तोत्रम् में गंगा के स्व एवं महिमा को अद्भुत चमत्कारिक शब्दों में उद्घाटित किया गया है।

देवि सुरेश्वरि भगवति गंगे त्रिभुवनतारिणि तरलतरंगे।
शङ्करमौलिविहारिणि विमले मम मतिरास्तां तव पदकमले।।[11]

अर्थात् सम्पूर्ण प्राणियों को सुख प्रदान करने वाली हे मातः। तुम्हारा माहात्म्य वेदों में व है। मैं तुम्हारी महिमा को कुछ भी नहीं जानता।

पतितोद्धारिणी जाह्नवी गंगे खण्डितगिरिवरमण्डितभंगे
भीष्मजननि हे मुनिवरकन्ये पतितनिवारिणि त्रिभुवनधन्ये
कल्पलतामिव फलदां लोके प्रणमति यस्त्वां पतति न शोके।
पारावारविहारिणि गंगे विमुखवनिताकृततरलापांगे।।[12]

अर्थात् हे देवी गंगे। तुम्हीं पतित जन का उद्धार करती हो, तुम्हीं ने गिरिराज का ख किया है, जिसके ऊपर तुम्हारी भंगी लहरें अति सुशोभित हैं एवं तुम्हीं भीष्म की जननी और मुनि की कन्या हो त्रिभुवन में तुम्हारे अतिरिक्त पापनिवारिणी और कोई नहीं है, इसीलिये तुम्हें कहते हैं।

रोगं शोकं तापं पापं हर मे भगवति कुमतिकलापम्।
त्रिभुवनसारे वसुधाद्दारे त्वमसि गतिर्मम खलु संसारे।[13]

अर्थात् हे भगवति! मेरा रोग, शोक, ताप, पाप एवं कुमति का हरण करो। त्रिभुवन की एवं पृथ्वी की अलंकार रूप हे देवी तुम्हीं से मेरी गति है।

श्री वाल्मीकरचित गंगाष्टकस्तोत्र में भी पापाहारि, त्रिपुरारिशिरश्चारि, शङ्करकारि, तरण मनोहारि सुरसरिकी महिमा का बखान किया गया है। गंगा के धार्मिक, आध्यात्मिक, सांस्कृ वैज्ञानिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक एवं आर्थिक पहलुओं पर प्रकाश डालने वाले भारतीय वाङ्म इतने अधिक साहित्य मिलते हैं कि लिखने वाला किंकर्तव्यविमूढ़ हो सकता है कि किसे लिखा और किसे छोड़ा जाय। पुराणों के अतिरिक्त आधार ग्रन्थों में भी गंगा महिमा का विशद वर्ण गंगा की उत्पत्ति की कथा कुछ थोड़े बहुत परिवर्तनों के साथ प्रायः सभी पुराणों में एक–स पुराणों में गंगा की अवस्थिति के विषय में भिन्नता है। वराह पुराण में बताया गया है कि कलियु चरण में पृथ्वी गंगा की धारा में विलीन हो जायेगी–

पृथ्वी गंगयाहीना भविष्यत्यनितमे कली।

गंगा की पावनधारा की कलकलमयी स्वर लहरी को सुनकर पापी का हृदय भी थोड़ी देर के लिए किसी दूसरे भाव में मग्न हो जाता है। गोस्वामी तुलसीदास ने एक ही चौपाई में गंगा के संबंध में वह सब कुछ कह दिया है जो परम प्राचीन काल से हमारे पूर्वज कहते आए हैं और जो भविष्य में विज्ञान के प्रकाश में उत्पन्न होने वाली हमारी भावी पीढ़ियाँ सैकड़ों–सहस्त्रो वर्षों के बाद गंगा के सम्बन्ध में कहेंगी।

गंग सकल मुद – मंगल मूला।
सब सुख करनि हरनि सब सूला।

वर्तमान में किंकर्तव्यविमूढ़ हम भारतीयों का यही परम कर्तव्य बनता है कि हम सब मिलकर गंगा को स्वच्छ रखें और मुक्तकण्ठ से एक स्वर में कहें – गंगा तू बहती चल.....

सन्दर्भ ग्रंथ

शंकराचार्य कृत गंगाष्टक – श्लोक संख्या 22
बृहन्नारदीयपुराण–प्रथम खण्ड–गंगा माहात्म्य, श्लोक 12–15
वही – प्रथम खण्ड – गंगामाहात्म्य, श्लोक सं0 58–60
वही – प्रथम खण्ड – गंगामाहात्म्य, श्लोक सं0 124–125
वही – प्रथम खण्ड – गंगामाहात्म्य, श्लोक सं0 68–69
बृहन्नारदीयपुराण–द्वितीय खण्ड–गंगा माहात्म्य, श्लोक सं0 26–27
बृहन्नारदीयपुराण–द्वितीय खण्ड–गंगा माहात्म्य, श्लोक सं0 31–32
बृहन्नारदीयपुराण–द्वितीय खण्ड–गंगा माहात्म्य, श्लोक सं0 40
बृहन्नारदीयपुराण–द्वितीय खण्ड–गंगा माहात्म्य, श्लोक सं0 42
बृहन्नारदीयपुराण–द्वितीय खण्ड–गंगा माहात्म्य, श्लोक-सं0 45
शंकराचार्य कृत गंगास्तोत्रम्
शंकराचार्य कृत गंगास्तोत्रम्
शंकराचार्य कृत गंगास्तोत्रम्

सहायक ग्रन्थ
बृहन्नारदीय पुराण– प्रथम एवं द्वितीय खण्ड – सम्पादक श्री राम शर्मा आचार्य संस्कृति संस्थान, बरेली, संस्करण 1974
शंकराचार्य कृत गंगाष्टक

MENTOR MENTEE MEETING

Dr. Nisha GGCC 2021
(Hindi)

ISSN : 2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा
Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
Publisher : Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Dated : 30 06 / 2021

June/2021/01-28

CERTIFICATE OF PUBLICATION

This is to certify that the paper entitled

द्विवेदी युगीन हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना

Author by

डॉ० निशा गोयल

Published in BOHAL SHODH MANJUSHA

ISSN No. - 2395:7115, Impact Factor 3.811

June 2021 (हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना विशेषांक)

Vol. 13, Issue-6(1), Page No. 98-102

Editor

Dr. Naresh Sihag, Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

International Academy of Science, Engineering and Technology
Connecting Researchers; Nurturing Innovations

IASET

INTERNATIONAL JOURNAL OF LINGUISTICS AND LITERATURE (IJLL)

www.iaset.us

VOLUME 10 ISSUE 2 FEB - MAR 2021 ISSN :2319-3956

INTERNATIONALLY INDEXED, BI - MONTHLY AND REFEREED JOURNAL

Impact Factor (JCC) - 2020 : 6.0362

(As computed by ASJR : www.journal-metrics.com)

Index Copernicus Value (ICV) - 2017: 30.92

(As computed by IC: http://jml.indexcopernicus.com/search/details?id=44665)

Dr Mamta Upadhyay
Paper Publication
Deptt. Of English
2021

NAAS Rating : 2.67

(As computed by NAAS : http://naasindia.org/documents/journals2017.pdf)

International Academy of Science, Engineering and Technology
1st Floor, Plot No. 37A, City Park Layout, Old No. 34 / New No. 12, Egattur (Near SIPCOT II PARK, OMR - Opp. FLSmidth)
Chennai - 603 103, Tamil Nadu, INDIA Telephone: +91-44-6740 7610 Mobile: +91 96770 10334

• USA • India • Australia

Department of English

International Journal of Linguistics and Literature (IJLL)

Vol. 10, Issue 2, Feb–Mar 2021

ISSN 2319-3956

TABLE OF CONTENTS

S. NO	TITLE	AUTHOR(S)	PAGE NO
1.	Analysis of the Conditions of Dalit Women as Portrayed in Contemporary Literature Study on 'The Weave of My Life' and 'The Prison We Broke'	Mamta Upadhyay & Chabi Tomer	1–6
2.	Self - Directed Learning: A Perspective	Babi Duli & Laxmi Ramana	7–12
3.	Death of Literature	Yogesh Sharma	13-18

International Journal of Linguistics and
Literature (IJLL)
ISSN (P): [illegible]; ISSN (E): [illegible]
Vol. 10, Issue 2, Feb–Mar 2021; 1–6
© IASET

International Academy of Science,
Engineering and Technology
Connecting Researchers; Nurturing Innovations

ANALYSIS OF THE CONDITIONS OF DALIT WOMEN AS PORTRAYED IN CONTEMPORARY LITERATURE: STUDY ON 'THE WEAVE OF MY LIFE' AND 'THE PRISON WE BROKE'

Mamta Upadhyay[1] *& Chabi Tomer*[2]

[1]*Associate Professor, Department of English, R.G.P.G. College, Meerut, Uttar Pradesh, India*

[2]*Research Scholar, Department of English, R.G.P.G. College, Meerut, Uttar Pradesh, India*

ABSTRACT

The agony, frustration and pain of Dalit women find a distinctive place in Indian literature. The present research has been material on to analysing the conditions of Dalit women as portrayed in contemporary literature. For this, comparative analysis of 'The Weave of Life' and 'The Prison We Broke' has been conducted here. The study has specially focused on the manner in which the social and economic conditions of the Dalit women have been portrayed in the two literary works. The common themes that have been found in both the autobiographies are identity crisis, gender discrimination, sexual subjugation and denial of the right to education.

KEYWORDS: *Dalit Women, Mahar, Poverty, Society*

Article History

***Received:** 15 Jan 2021 | **Revised:** 19 Jan 2021 | **Accepted:** 03 Feb 2021*

INTRODUCTION

Empowerment can be defined as the right to access resources, material well-being, decision making power and the ability to make decisions individually without an external influence. Women empowerment in particular refers to the right of women to have equal right as men as far as access to resources, decision making, wellbeing are concerned(S. D. Kamble). In India, Dalit women are the specific segment of women population who have been made to live in silence centuries and remain silent sufferers of the numerous instances of exploitations, societal barbarity and oppressions. They are not expected to have control on their body, earnings or lives. The societal position of Dalit women in India is distinctively different from that of other Indian women in the manner that they are denied education, societal identity and dignity, income, religious rights and human rights (Ghatak).

The agony, frustration and pain of Dalit women finds a distinctive place in Indian literature.Eminent authors have given expression to the experience to the deep feelings of these Dalit women through various literary works(Ghosh). Thus, the study has taken into consideration two prominent literary creations of the contemporary times, namely, ***The Weave of Life*** by Urmila Pawar and *The Prison We Broke* to analyse the condition of Dalit women in India. The study shall specially focus on the manner in which the social and economic conditions of the Dalit women have been portrayed in the two literary works.

Mrs Preeti
Deptt. of English
2021

Impact Factor
3.811

ISSN : 2395-7115
September 2020
Vol. 12, Issue 6

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिन्दी भाषा के द्वारा

सारे भारत को

एक सूत्र में पिरोया

जा सकता है।

-महर्षि दयानन्द सरस्वती

प्रधान सम्पादक : डॉ. सुलक्षणा अहलावत

सम्पादक : डॉ. नरेश सिहाग, एडवोकेट

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

(P.G.) College, ... Department of English

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1	सम्पादकीय	डॉ. [illegible]	7-7
2	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटकों में जनवादी चेतना	नीलम रानी	8-11
3	सामाजिक समरसता के रूप में हरीश नवल	कुसुम यादव	12-15
4	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटकों में जनवादी चेतना	नीलम रानी	16-19
5	साहित्य के संदर्भ में समाजवादी विचारधारा का विश्लेषण	डॉ. मुकेश कुमार	20-26
6	Impact of Smart Classes on Scientific Process Skills and Attitude Towards Science of Secondary School Students	Fazal Iqbal	27-30
7	छत्तीसगढ़ में जनजातीय समस्याओं के समाधान में सरकारी योजनाओं का क्रियान्वयन भूमिका	डॉ. प्रमोद यादव डॉ0 भूपेन्द्र कुमार	31-34
8	नौकरी-पेशा : स्त्री-पुरुष के समतामूलक सम्बन्धों का विवेचन	हरीश कुमार	35-39
9	मुंशी प्रेमचन्द का आदर्शोन्मुख यथार्थवाद एवं उनके कथा साहित्य के पात्रों की वर्तमान समय में प्रासंगिकता	दिलीप सिंह राजपूत	40-42
10	रेणु की कहानियों में सामाजिक चेतना	डॉ0 चन्दन कुमार सिंह	43-45
11	महामारी, समाज और साहित्य	डॉ. श्रीनिवास सिंह यादव	46-52
12	स्थानीय शासन का ऐतिहासिक विकास : एक अध्ययन	रमेश राम	53-56
13	विभाजन की स्वानुभूत अभिव्यक्ति : डगर डगर पर मगर	मुकेश	57-61
14	दलित स्त्री विमर्श : दोहरे अभिशाप की अवधारणा	डॉ0 मोहम्मद अथीर उद्दीन	62-64
15	किरातार्जुनीयम् महाकाव्य में प्रकृति का सौन्दर्य-वर्णन	अंकिता प्रजापति	65-69
16	Prospects and Challenges of the Digital Economy in India	Dr. Amrendra Kumar	70-72
17.	Aspects of Buddhadeva and Buddhism influencing Bengali Literature	Dr. Rajani Kumari	73-75
18	आधुनिक हिन्दुस्तानी संगीत के विकास में घरानों की सार्थकता एवं योगदान	कु0 आकांक्षा पाल	76-78
19	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटकों में जनवादी चेतना	नीलम रानी	79-82
20	भीष्म साहनी के उपन्यासों में [illegible] साम्प्रदायिकता (विशेष सन्दर्भ : तमस विभाजन की त्रासदी)	किरन यादव	83-86

Department of English

21	[illegible] हिन्दी के [illegible]	दीपक सिंह	87–89
22	हिंदी साहित्य के क्रांतिकारी रचनाकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल की भाषिक दृष्टि	डॉ. [illegible]	90–93
23	[illegible] के काव्य मूल्य एवं महत्व	डॉ. [illegible]	94–97
24	रामवृक्ष बेनीपुरी का कथा साहित्य और लोकजीवन के विविध रूप	[illegible]	98–102
25	लोक साहित्य और बिहार के लोक देवी–देवताओं का महत्व	[illegible] कुमार	103–106
26	Interim Relief Under Arbitration Perfect Balance Between Courts And Tribunal	Dr. Farhat Khan	107-109
27	"आत्मनिर्भर भारत" कल्पना अथवा हकीकत	डॉ0 आकोश कुमार दुबे श्रीमती सोनू मिश्रा	110–113
28	श्री मदभगवद गीता मे अध्यात्म विज्ञान	रीना कुमारी	114–118
29	Feminism in Indian Writing in English	Mrs.Preeti	119-122
30	हिंदी हाइकू कविता	रेश्मा एम. एल	123–125
31	नगलेश डबराल की कविताओं के राजनीतिक आयाम	Swati Mishra	126-128
32	काव्य भाषा पर अज्ञेय का दृष्टिकोण	डॉ. अरुणा चौधरी	129–133
33	चन्द्रगुप्त नाटक में स्वच्छंदतावाद	शालिनी सी	134–138
34	भाषा के नवीन प्रयोग	डॉ. विकास शर्मा	139–141
35	मधुकर गंगाधर का औपन्यासिक संसार	आर्या शिवानी	142–146
36	रागदरबारी उपन्यास का मनोवैज्ञानिक अनुशीलन	जय मंगल प्रसाद यादव	147–150
37	महिला आत्मकथा में अभिव्यक्त संघर्ष	डॉ. चंदा सोनकर	151–154
38	Evolution and Development of Panchayati Raj in India	Sharada Prasad Singh	155-163
39	वरिष्ठ नागरिक : हम सबकी जिम्मेदारी	डॉ. रितु कुमारी	164–166
40	मुस्लिम न्यायिक विवाह–विच्छेद	गोदावरी कुमारी	167–170
41	DILEMMA BETWEEN 'POVERTY' & 'SOCIAL EXCLUSION': TWO SIDES OF THE SAME SYSTEMATIC COIN	Akhilesh Kumar	171–177

Girls (P.G.) College, Meerut
Department of English

1/10/2021, 16:07 IMG-20211030-WA0016.jpg

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा
Bohal Shodh Manjusha

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
Email : grsbohal@gmail.com Website : bohalsm.blogspot.com

Certificate of Publication

is awarded to

Mrs. Preeti

for the paper titled

Feminism in Indian Writing in English

Published in **Bohal Shodh Manjusha** ISSN:2395-7115
September 2020, Vol. 12, Issue-VI (I) Page No. 119-122

INTERNATIONAL PEER REVIEWED/REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES QUARTERLY
RESEARCH JOURNAL WITH **IMPACT FACTOR** 3.811

NISCAIR

Dated : 10-09-2020

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

www.[illegible].blogspot.com
Impact Factor [illegible]
Bohal Shodh Manjusha ISSN [illegible]
September 2020 Page No. [illegible]
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFERRED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Feminism in Indian Writing in English

Mrs Preeti
Assistant professor, Department of English, R G P G College, Meerut, C C S University, Meerut

Abstract :- Feminism, in ordinary sense believes that man and woman should have equal rights and opportunities in all spheres of life. They should have equality in social, economical, educational and political fields. For a long time woman has been the victim of male domination and has been oppressed. She was considered a burden on the earth. Gradually, this suppression of women was taken into mind by some socialists as well as some authors. Many voices against inequality came into being. This led to the birth of women's liberation movement aiming at an uplift of women. In England the first major feminism appeared in the work of "Mary Wollstonecraft she pleaded for equal rights for women in her introduction to A Vindication of the Rights of Woman. The modern woman has become more aware of her potential. In Indian Writing most of the women writers such as Kamala Das, Shashi Deshpande, Nayantara Sahagal, Anita Desai etc. portray the anxieties and troubles of women.

Introduction :- Feminism, believes that man and woman should have equal rights and opportunities in all spheres of life. For a long time woman has been the victim of male domination. She was considered just an object of pleasure. An increasing awareness of injustice done to the women, slowly aroused many voices against this injustice. In England the first major feminism appeared in work of 'Mary Wollstonecraft's "A Vindication of The Rights of Woman", where she demands that women should be treated as human beings :-

"Dismissing, then, those pretty feminine phrases, which the men condescendingly use to soften our slavish dependence, and despising that weak elegancy of mind, exquisite sensibility, and sweet docility of manners, supposed to be the sexual characteristics of the weaker vessel, I wish to show that elegance is inferior to virtue, that the first object of laudable ambition is to obtain a character as a human being, regardless of the distinction of sex and that secondary views should be brought to this simpletouchstone."[1]

Woman plays an indispensable part in world's overall progress. Though in ideology she is considered a 'Goddess' yet in practice male chauvinism has deliberately reduced her at every step. But slowly the position of women changed and they began to take part in all fields.With the growth of educational and vocational opportunities, the women are becoming conscious of their rights.

To quote *Rajkumari Amrit Kaur*, "We are aware of the necessity of finding and being judged by our standards as free human beings,voluntarily accepted, we are determined to face the facts of life, to fight the battle of our sex and take the risk."[2]

Indian Feminism are now at a crucial juncture as now the women are aware of their rights. Feminism is showcasing in works of many Indian authors. Most Indian women writers such as Kamala Das, Nayantara

Mrs Anjali Gupta
Deptt of History
2021

12

ISSN (P) : 0976-5255
(e) : 2454-339X
Impact Factor : 8.354 (SJIF)

शोध मंथन

A Peer Reviewed & Refereed International Journal

Vol. - XII No.- 2 April-June 2021

Editor:
Dr (Capt.) Anjula Rajvanshi

JOURNAL ANU BOOKS
Delhi Meerut
www.anubooks.com

30/10/21

भारत चीन संबंध: जी 7 विस्तार के संदर्भ में

प्राप्त: 22.05.2021
स्वीकृत: 18.06.2021

श्रीमती अंजली गुप्ता
असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग,
आर.जी. पी.जी. कॉलेज, मेरठ
ईमेल: [illegible]@gmail.com

सारांश

वर्तमान समय में भारत चीन संबंध एक ज्वलंत मुद्दा है। भारत और चीन दो पड़ोसी राष्ट्र हैं और वर्तमान में दोनों विश्व की दो उभरती शक्तियां हैं। इन दोनों के बीच प्राचीन काल से ही सांस्कृतिक तथा आर्थिक संबंध रहे हैं। यद्यपि 1949 में चीन में साम्यवादी शासन की स्थापना हुई [illegible] दोनों देशों के बीच मैत्री संबंध सदा बने रहे। वर्ष 1954 में चीन, भारत और म्यांमार द्वारा [illegible] शांतिपूर्ण सह अस्तित्व के पांच सिद्धांत यानी पंचशील स्वीकृत किए गए। परंतु नियमों को ताक पर रखकर अक्टूबर 1962 में चीन ने भारत पर आक्रमण कर दिया। उस समय से दोनों देशों के संबंधों में कई उतार-चढ़ाव आते रहे हैं। चीन के साथ भारत के संबंधों में [illegible] अमेरिका के लिए भारत से संबंध मजबूत करने का एक अच्छा अवसर [illegible] अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा जी-7 [illegible] कोरोनावायरस महामारी के समय [illegible] इसमें सम्मिलित होने के लिए आमंत्रित करना, चीन को [illegible] विस्तार का विचार रखना, भारत को इसमें सम्मिलित [illegible] भारत-चीन के [illegible] चुनौतियां तथा अन्य [illegible] समूह का हिस्सा न बनाना, [illegible] विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्द: भारत, चीन, अमेरिका, जी-7, बेल्ट एंड रोड इनीशिएटिव।

प्रस्तावना

जी –7 विश्व की सबसे अधिक विकसित अर्थव्यवस्थाओं वाले देशों का समूह है जो वैश्विक शुद्ध संपत्ति का 62% से अधिक का प्रतिनिधित्व करते हैं।[1] इस समूह का गठन 1975 में विश्वव्यापी तेल संकट के कारण हुआ था। प्रारंभ में फ्रांस, जर्मनी, जापान, इटली, ब्रिटेन और अमेरिका ये छः देश इसके सदस्य थे। अगले वर्ष कनाडा के इस समूह में शामिल हो जाने से यह समूह जी– 7 बन गया। 1998 में रूस को भी इसमें सम्मिलित कर लिया गया और यह समूह जी–8 बन गया। किंतु वर्ष 2014 में रूस द्वारा यूक्रेन से क्रीमिया को हड़प लेने पर रूस को इस समूह से निलंबित कर दिया गया और यह समूह पुनः जी–7 बन गया। यह समूह स्वयं को कम्युनिटी ऑफ वैल्यूज अर्थात मूल्यों का आदर करने वाला समुदाय मानता है।[2] लोकतंत्र और कानून का शासन, स्वतंत्रता और मानवाधिकारों की सुरक्षा और समृद्धि तथा सतत विकास इसके प्रमुख सिद्धांत हैं। यह समूह आर्थिक विकास, संकट प्रबंधन, वैश्विक सुरक्षा, आतंकवाद जैसे वैश्विक मुद्दों पर आम सहमति के लिए प्रतिवर्ष शिखर सम्मेलन का आयोजन करता है। प्रत्येक सदस्य देश बारी–बारी से इसकी अध्यक्षता करता है और दो दिवसीय वार्षिक शिखर सम्मेलन की

Dr. Babita Maji
Deptt. of Political Sc.
2021

BRICS Towards The Multipolar World

Dr. Babita Maji
Assistant Professor
Department of Political Science
R.G.(P.G) College.Meerut
Email: majibabitargpg@gmail.com

Abstract

Rise of new groups in 21st century is witnessing a Shift of power in world order. The BRICS emerged as regional organisations which have similar values and common objectives. After the formation in 2009 BRICS has been trying to create an important international system and a multipolar world. This organisation demand for a revival in the traditional setting of United Nations security council, reforms in the international financial System such as IMF World Bank WTO and have initiated a new discourse of the global south on the responsibility to protect climate change. The establishment of BRICS new development Bank has been one of the prime contributions of BRICS which shows their willingness and capability to accept the responsibilities for new growing power. This paper will assess that how this organisation will help to create a multipolar world. This paper also examines that by the mid 21st century BRICS would be wealthier than US hegemony and BRICS systems also have shaping multipolar global order.

Keywords- *BRICS, Multipolar World, Global Order.*

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 11.05.2021
Approved: 10.06.2021

Dr. Babita Maji

BRICS Towards The Multipolar World

RJPSSs 2021, Vol. XLVII, No. 1, pp. 024-031
Article No.04

Online available at:
http://rjpsss.anubooks.com
https://doi.org/10.31995/rjpsss.2020147i01.04

Dr. Archana Rani
Drg & Ptg. Deptt 2021

International Refereed
& Blind Peer-Reviewed
Multidisciplinary
Research Journal

Vol 8
Issue 1
Jan -Feb- Mar
2021

ISSN 2348 – 3318

Recent Researches in Social Sciences & Humanities

www.recentjournals.in
www.wellpress.in

CONTENTS

S.No.	Titles & Author/s	Pages
1.	A Comparative Study on Attitude towards Interest in E-learning and Book learning of Students of Higher Education of Different Disciplines *Bhawna Gupta & Pooja Gupta*	1-5
2.	Benefits of Yoga in Sports *Babita Joshi & Bijendra Singh*	6-11
3.	Covid-19 : A Catalyst Towards Taking A Leap In Transformation of Digital Information and Its Dissemination For Providing Global Education *Zaufishan Sajjad*	12-18
4.	Bharati Mukherjee : Diasporic Study of her Novels *Atul Dev Sharma & Arvind Kumar Mishra*	19-21
5.	फलित ज्योतिष में युवाओं के चंद्रमा की स्थिति का अल्फा ई.ई.जी. के संबंध का प्रभाव एवं मानसिक विश्रांति के संदर्भ में एक विवेचनात्मक अध्ययन *मनीष गुप्ता, रितेश कुमार एवं दीपक बारपेटे*	22-26
6.	जनजातीय जातियों में विवाह के परम्परागत एवं नवीन प्रतिमान : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन *खुशबू आर्या एवं मंजू पनेरू*	27-31
7.	आदिवासी जनजाति राजि के सरोकार एवं वन अधिकार अधिनियम 2006 : एक मूल्यांकन *[illegible] प्रकाश*	32-37
8.	सतत विकास एवं पर्यावरणीय समस्याएं *संतोष कुमार सिंह*	38-41
9.	वेदों में यज्ञ की महत्ता *महेश आमेटा*	42-48
10.	पर्यावरणीय विमर्श में गांधी वादी चिंतन की प्रासंगिकता *मुनेश कुमार पाठक*	49-51
11.	धर्मनिरपेक्ष भारतीय संस्कृति में ईसाई धर्म एवं कला का संवर्द्धन *अर्चना रानी एवं रजनी बंसल*	52-58
12.	प्रताप भैय्या : शैक्षिक संस्थाओं के माध्यम से समाज में दिया गया योगदान *आशा खाती*	59-63
13.	वर्तमान युग में सोशल मीडिया के सामाजिक दुष्प्रभावों का विश्लेषण *शैफाली शुक्ला*	64-68
14.	मृणाल पाण्डे की कहानियों में चित्रित नारी जीवन *पूनम मियान*	69-73
15.	भारत में महिला सशक्तिकरण के प्रमुख संवैधानिक व वैधानिक प्रावधान *दानवीर सिंह एवं लोकेन्द्र कुमार*	74-78
16.	साइबर आतंक एक चुनौती : सुरक्षा की दृष्टि से *कमल पोखरियाल एवं सतीश कुमार*	79-81
17.	नासिरा शर्मा के अक्षयवट उपन्यास में चित्रित इलाहाबाद लोक संस्कृति एवं लोक सरोकार *नमित कुमार शर्मा*	82-84
18.	कुमाऊँनी लोक गीतों के विलुप्त होते स्वरूप *प्रभा बिष्ट*	85-91

●●●

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
International Refereed, Blind Peer Reviewed Multidisciplinary & Open Access Research Journal

धर्मनिरपेक्ष भारतीय संस्कृति में ईसाई धर्म एवं कला का संवर्द्धन

अर्चना रानी[1] एवं रजनी बंसल[2]
1. चित्रकला एवं एसोसिएट प्रोफेसर, ड्राइंग एवं पेन्टिंग विभाग, आर.जी. (पी.जी.) कॉलेज, मेरठ
2. शोध छात्रा, ड्राइंग एवं पेन्टिंग विभाग, आर.जी. (पी.जी.) कॉलेज, मेरठ

Received: [illegible] 1st RPR: [illegible] 2nd RPR: [illegible] Accepted: [illegible]

ABSTRACT

[illegible] इस धरती पर हिन्दू, जैन, बौद्ध, मुस्लिम धर्म के साथ-साथ ईसाई धर्म के प्रचार का केन्द्र भी भारत [illegible] कला एवं संस्कृति रही। ऐसा कोई धर्म नहीं जब भारतीय कलाकारों ने अपनी तूलिका का प्रयोग न किया [illegible] मानवता से युक्त ईसाई धर्म के प्रवर्तक [illegible] को पोषित एवं संवर्द्धित न किया हो। इसी श्रृंखला में प्रेम, त्याग, [illegible] पवित्र पुस्तक 'बाइबिल' के विभिन्न विषयों को [illegible] माता मरियम के चित्र एवं मूर्तियाँ बनाई। ईसाई धर्म की पवित्र पुस्तक [illegible] भारतीय कलाकारों ने चित्रित किया। मुगलकाल से लेकर आधुनिक भारतीय कलाकारों द्वारा चित्रित ईसाई कला का संवर्द्धन ही प्रस्तुत शोध-पत्र का आधार है।

शब्द संकेत: धर्म, भारतीय संस्कृति, कला, धर्म, अभिव्यक्ति, मूर्तिकला, चित्रकला, संवर्द्धन।

प्रस्तावना

[illegible] सभी कलाओं का जन्म धर्म के साथ हुआ है। कला के उद्भव में धर्म का बहुत बड़ा हाथ है। धर्म ने अपने प्रचार [illegible] धर्मनिरपेक्ष भारतीय संस्कृति में हिन्दू, जैन [illegible] भारतीय कला का धार्मिक इतिहास बहुत प्राचीन है। [illegible] ईसाई धर्मों ने भारतीय कला को प्रभावित किया है। उदाहरणार्थ—अजन्ता, बाग आदि की गुफाओं में बौद्ध [illegible] जैन धर्म से सम्बन्धित भारतीय कला को एलोरा की गुफाओं से लेकर मथुरा शैली में देखा [illegible] हिन्दू धर्म की कला के प्रभाव को दर्शाता है। मध्यकाल में आए इस्लाम धर्म का प्रभाव भी भारतीय कला [illegible] इस्लामिक कला का ही प्रमाण था। इसी प्रकार पाश्चात्य आगमन के साथ ईसाई धर्म [illegible] वास्तुकला के सुन्दर रूपों का सृजन हुआ। धीरे-धीरे कलाओं का विभिन्न रूपों में संवर्द्धन [illegible]

साहित्य पुनरावलोकन

[illegible] भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों के द्वारा लिखी गयी पुस्तकों का अध्ययन [illegible] की पुस्तक 'भारतीय संस्कृति का विकास' - 2008 में इनके [illegible] प्रकाशित पुस्तक 'भारतीय संस्कृति कोश, भाग-1' का चिंतन-मनन किया [illegible] को समझ बना दिया। मैंने भारत में ईसाई धर्म के अध्ययन हेतु [illegible] में प्रकाशित एस.पी. वर्मा की पुस्तक 'मुगल पेन्टर्स एण्ड देयर वर्क्स' [illegible] की पुस्तक 'मुगल एण्ड डेक्कन पेन्टिंग्स' एवं [illegible] अकादमी 1987 में प्रकाशित पुस्तकों का अध्ययन कर शोध पत्र [illegible]

शोध-पत्र का उद्देश्य एवं प्रक्रिया

[illegible] भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न अंग बन चुका है। भारतीय कला [illegible] समकालीन चित्रकार कैसे ईसाई धर्म का संवर्द्धन करते हुए हैं एवं कैसे [illegible] प्रक्रिया के अन्तर्गत [illegible] मुगलकालीन चित्रों से शुरू होते हुए आधुनिक [illegible] संवर्द्धन पर प्रकाश डालना। हमारी संस्कृति सभी धर्मों को अपने में समावेश करने वाली है। इस शोध-पत्र [illegible] ईसाई धर्म को अपनी कला संस्कृति से संवर्द्धित किया है, [illegible]। शोध की प्रक्रिया में ईसाई धर्म [illegible] धर्म निरपेक्ष भारतीय संस्कृति का परिचय देते हुए भारतीय कला में ईसाई धर्म के संवर्द्धन पर चर्चा करेंगे।

Dr Archana Rani
Dg & Ptg
2021

ISSN 2395 - 2148
JAN TO JUNE - 2021
VOL - V, ISSUE - 1st

Art Fragrance

A RESEARCH JOURNAL OF FINE ARTS, PERFORMING ARTS & FASHION

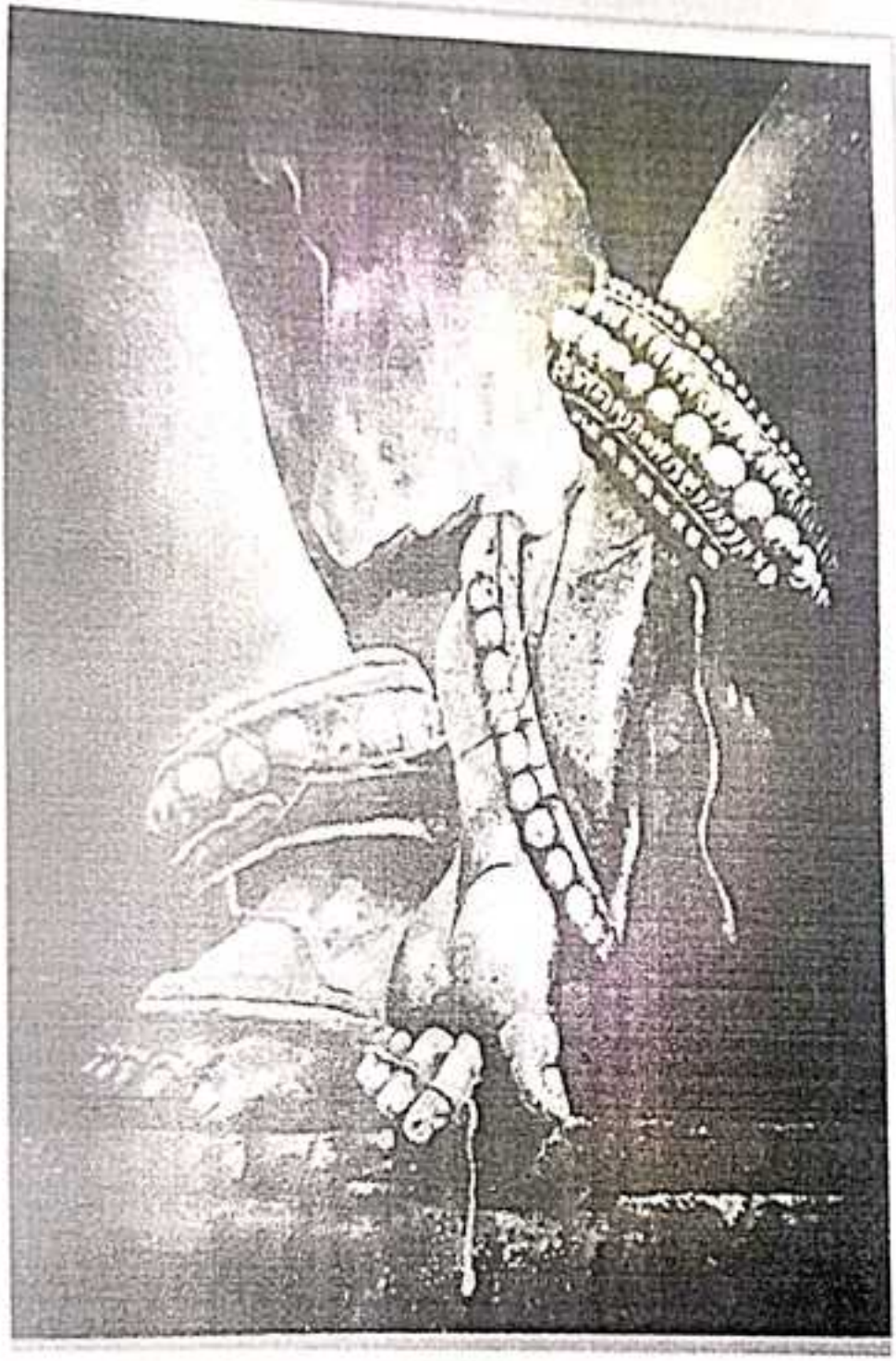

SUBHARTI UNIVERSITY
UGC Approved Meerut
GRADE 'A' ACCREDITED BY NAAC

Nandlal Bose Subharti College of Fine Arts & Fashion Design

Pt. Vijay Shankar Mishra	संगीत में अनुसंधान: समस्यायें और समाधान	
Dr. Archna Rani	ललित कलायें : कलाओं का सामंजस्य	
Dr. Kiran Sharma	गणित और संगीत	1
Jaya Darondey	आधुनिक भारतीय कला में दलित और गैर-दलित कलाकार की महत्त्वपूर्ण भूमिका	1
Lal Babu Nirala	तबला के नवीन घरानों के निर्माण न होने में व्यावसायीकरण की भूमिका	1
Dr. Shiv Narayan Mishra	''बिहार के लोकगीत, इतिहास, विभिन्न प्रकार,वर्तमान स्थिति एवं विशेषताएँ''	1
Dr. Anshu Srivastava	Artificial Intelligence a Changing Face of Fine arts and Design Industries	2
Dr. Anubha Gupta	वैदिक वाड्मय में संगीत – एक वर्णानात्मक अध्ययन	3
Devika Aggarwal	पटियाला घराने के उस्ताद मुनव्वर अली खाँ का सांगीतिक योगदान	3
Divya Sharma	संगीत के परिवेश में बदलाव हेतु वैज्ञानिक उपकरणों का योगदान	3
...na Bhatnagar (JRF)	Impact of Western Music on Indian Music	4
Krishna Kumar	डॉ0 जगमोहन माथोडिया (श्वान चित्रण श्रृंखला)	4
Madhulika Singh	भारतीय शास्त्रीय नृत्यकलाएँ : कल, आज और कल	4
Prachi Chaudhary	The Effect of Graphic Design on Advertising	4
Priyanka Chauhan	भारत का लोकसंगीत और उसकी आत्मा	4
Rajni Gupta	आध्यात्मिकता और भारतीय संगीत का संबंध	5
Raksha Singh	कथक नृत्य का रसाहित्य	5
Rashmi Arya	चित्रकला में संगीत कला का समन्वय	5
Dr. Ruchi Rani	एकलव्य तथा द्रोण ऐतिहासिकता की धरोहर– द्रोण मंदिर	5
Ruchika Singh	भारत की समृद्ध परम्परा के प्रतीक उत्तर प्रदेश के लोकगीत	6
Sompura Krupal Chetanbhai	The Role of Kathak Dance on Body Composition	6
Dr. Vandna	लोकसंगीत के शत्रु के रूप में उभरते रियल्टी शोज	6
Vijay Kumar Bhatt	चिकित्सा क्षेत्र में संगीत के अनुप्रयोग	6

ललित कलायें : कलाओं का मानदण्ड

Kiran Sharma
Music

Art Fragrance

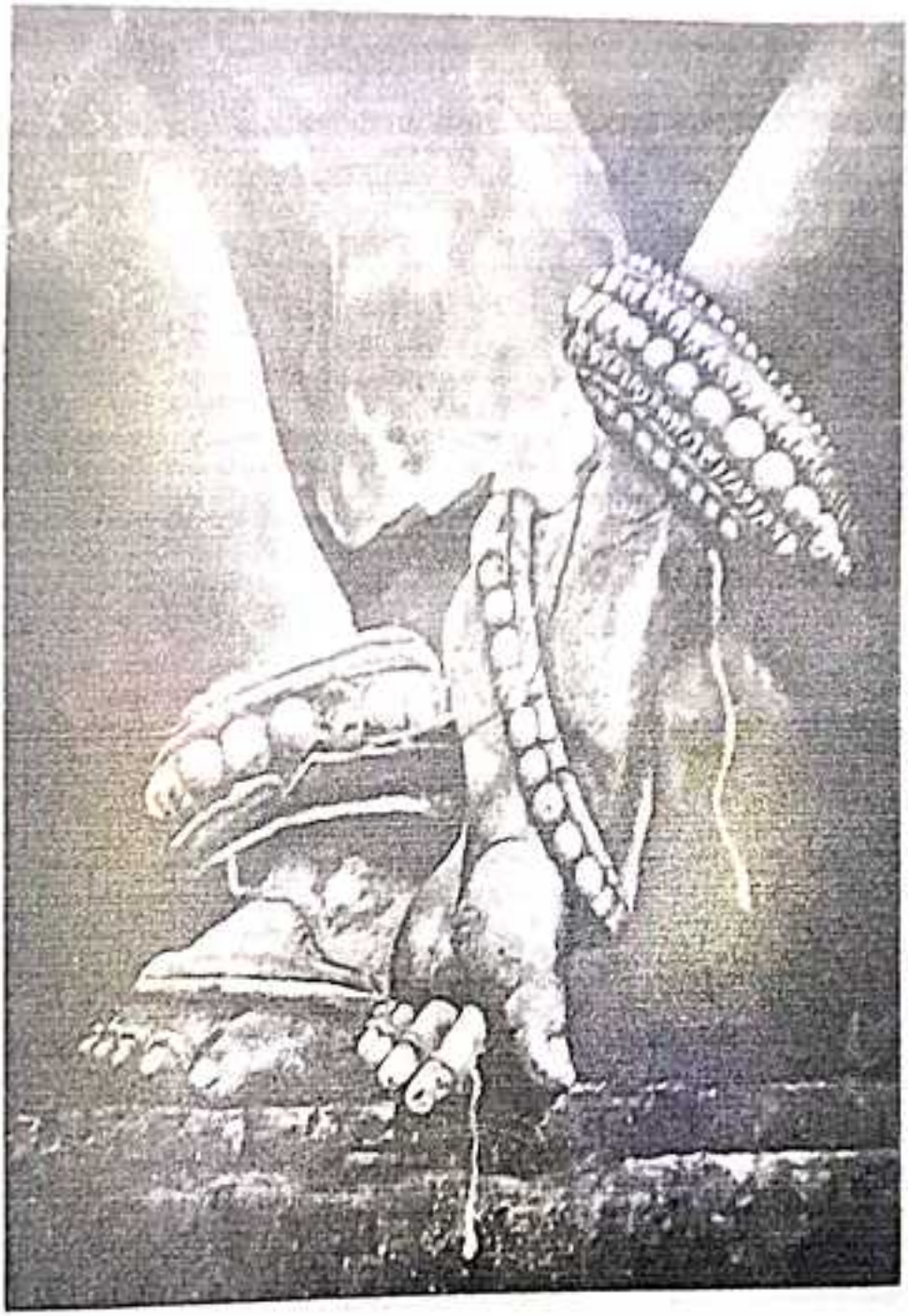

SUBHARTI

Nandlal Bose Subharti College of Fine Arts & Fashion Design

1. Dr. [illegible]	[illegible]	[illegible]
2. Dr. [illegible]	[illegible]	[illegible]
3. Dr. [illegible]	[illegible]	10
4. [illegible]	[illegible]	12
5. [illegible]	[illegible] की भूमिका	16
6. Dr. [illegible]	बिहार के लोकगीत, इतिहास, विभिन्न प्रकार, वर्तमान स्थिति एवं विशेषताएँ	19
7. Dr. Anshu Srivastava	Artificial Intelligence a Changing Face of Fine arts and Design Industries	24
8. Dr. Anubha Gupta	वैदिक वाङ्मय में संगीत – एक वर्णनात्मक अध्ययन	31
9. Devika Aggarwal	पटियाला घराने के उस्ताद मुनव्वर अली खाँ का सांगीतिक योगदान	34
10. Divya Sharma	संगीत के परिवेश में बदलाव हेतु वैज्ञानिक उपकरणों का योगदान	36
11. Isha Bhatnagar (JRF)	Impact of Western Music on Indian Music	40
12. Krishna Kumar	डॉ0 जगमोहन माथोडिया (श्वान चित्रण श्रृंखला)	42
13. Madhulika Singh	भारतीय शास्त्रीय नृत्यकलाएँ : कल, आज और कल	44
14. Prachi Chaudhary	The Effect of Graphic Design on Advertising	46
15. Priyanka Chauhan	भारत का लोकसंगीत और उसकी आत्मा	49
16. Rajni Gupta	आध्यात्मिकता और भारतीय संगीत का संबंध	52
17. Raksha Singh	कथक नृत्य का स्वसाहित्य	54
18. Rashmi Arya	चित्रकला में संगीत कला का समन्वय	56
19. Dr. Ruchi Rani	एकलव्य तथा द्रोण ऐतिहासिकता की धरोहर– द्रोण मंदिर	58
20. Ruchika Singh	भारत की समृद्ध परम्परा के प्रतीक उत्तर प्रदेश के लोकगीत	63
21. Sompura Krupal Chetanbhai	The Role of Kathak Dance on Body Composition	66
22. Dr. Vandna	लोकसंगीत के शत्रु के रूप में उभरते रियल्टी शोज़	68
23. Vijay Kumar Bhatt	चिकित्सा क्षेत्र में संगीत के अनुप्रयोग	69

भक्ति और संगीत

Vinay Sharma
Music

ISSN (P) : 0976-5255
(e) : 2454-339X
Impact Factor : 7.760 (SJIF)

शोध संचयन

A Peer Reviewed & Refereed International Journal

Vol. - XII No.- 1 Jan -Mar. 2021

Editor:
Dr (Capt.) Anjula Rajvanshi

JOURNAL ANU BOOKS
Delhi Meerut
www.anubooks.com

10. जनपद फर्रुखाबाद के ग्रामीण क्षेत्र में कृषि विकास स्तर की भौगोलिक विवेचना

महेन्द्र कुमार [illegible]

11. मानव स्वास्थ्य एवं आयुर्वेद

डॉ0 पूनम अग्रवाल 78

12. परिवर्तनशील समाज में उपेक्षित वृद्धजन एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ0 अतुल गुप्ता, स्वाति सक्सेना 85

13. [illegible] और संगीत

डॉ0 किरण शर्मा 90

14. सहकारी बैंकों में अतिदेय के उत्तरदायी तत्व एवं सुझाव

डॉ0 रूचि रानी, डॉ0 भूदेव सिंह 95

15. जनपद बिजनौर में रोजगार की स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ0 वन्दना राजपूत, डॉ0 एस.के. राजपूत 101

16. हिन्दी भक्ति काव्य में सांसारिक बंधन और उनसे मुक्ति के निर्दिष्ट उपाय

डॉ. बजिरा गुणसेन 108

17. संगीत: एक योग क्रिया

सरिता 115

18. संगीत में कलाकार व श्रोता की भूमिका

रूकैय्या 119

19. कौशल विकास पर नगरीयवृद्धिकरण का प्रभाव

डॉ0 अपर्णा तिवारी 122

20. निचले राप्ती बेसिन के बाढ़ मैदान में बाढ़ जोखिम का आकलन: एक भौगोलिक विश्लेषण

मंजेश कुमार 127

21. भारतीय दर्शनों में कर्म का स्वरूप/कर्मसिद्धान्त

डॉ0 रूचिका जैन 133

22. जम्मू कश्मीर पुनर्गठन विधयक, 2019: जम्मू कश्मीर समस्या का एक सशक्त प्रयास

पुष्पा कुमारी 140

23. कोविद १९ काल में लोगों के जन जीवन पर क्या हुआ असर

श्रीमती सोनल उमेश पाटिल 149

[illegible]

कला और संगीत

डॉ० किरन शर्मा
[illegible], संगीत विभाग
आर०जी०पी०जी० कॉलेज, मेरठ
Email: [illegible]@gmail.com

प्राप्त: 23.02.2021
स्वीकृत: 15.03.2021

सारांश

ललित कलाएं मनुष्य की सौन्दर्य चेतना की प्रतीक है। कला की विशेषता है आनंद प्रदान करना। सौन्दर्य ललित कलाओं का विशिष्ट गुण है। प्रत्येक ललित कला चाहे वह वास्तु कला हो, मूर्तिकला हो, चित्रकला हो, संगीत अथवा काव्य कला हो सभी का उद्देश्य अपनी कलाकृति के माध्यम से सौन्दर्य एवं रस की अभिव्यक्ति है। सौन्दर्य का विवेचन पाश्चात्य एवं भारतीय दोनों ही परम्पराओं में हुआ है। दोनों ही में कला का अन्तिम लक्ष्य सौन्दर्य की अभिव्यक्ति है, वह अभिव्यक्ति जो सुनने वाले को आनंदित करें। सौन्दर्य का रस के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। कला की सुन्दर अभिव्यंजना ही सौन्दर्य का आधार है। इससे प्राप्त आनंद ही सौन्दर्यानुभूति है। विशुद्ध संगीत से विशुद्ध रस आनंद की प्राप्ति होती है। संगीत में रसानुभूति के तीन प्रमुख गुण माधुर्य, ओज एवं प्रसाद हैं। इसके अतिरिक्त विविध भाव एवं काकु प्रयोग भी सौन्दर्य के उपादान हैं। जो राग की रंजकता को बढ़ाने में सहायक हैं। हम कह सकते है कि संगीत में निहित रंजक तत्व ही सौन्दर्य के प्रतीक है।

मुख्य शब्दः सौन्दर्य, कला, अनुकृति, अनुभूति, रस,अभिव्यक्ति, रंजकता, स्वर सामंजस्य, संतुलन।

प्रस्तावना

कला का उदभव सौन्दर्य की मूलभूत प्रेरणा से हुआ है। कला भावों की सौन्दर्यमयी अभिव्यक्ति है। मनुष्य ने इस धरती पर अपने अभ्युदय के साथ ही ईश्वर द्वारा प्रदप्त प्राकृतिक सौन्दर्य के दर्शन किए हैं। इसी सौन्दर्य से प्रेरित होकर वह स्वयं अनेक सुन्दर कलाकृतियों का सृजन करने लगा। कला के माध्यम से ही मनुष्य अपने भावों एवं विचारों की सार्थक अभिव्यक्ति करता है। इस अभिव्यक्ति का आधार ईश्वर, प्रकृति, आन्तरिक अनुभूति, बाह्य प्रभाव अथवा सौन्दर्यानुभूति कुछ भी हो सकता है। कला में भावों की अभिव्यक्ति के साथ सौन्दर्य की अभिव्यक्ति भी साकार रूप प्राप्त करती है।

भारतीय साहित्य में कला को शिल्प कहा गया है। तैत्तरीय उपनिषद में कहा गया है–

शोध मंथन

हिन्दी शोध (पत्रिका)

शोध मंथन में समाज, साहित्य, कला, संस्कृति, अर्थशास्त्र, राजनीतिविज्ञान, [illegible] शिक्षा, कानून, इतिहास, दर्शन, [illegible] शिक्षा, महिला जगत, पुरुष, बाल जगत आदि के मुद्दे [illegible] वैज्ञानिक पद्धति से पुख्ता व प्रामाणिक अन्तर्राष्ट्रीय शोधपत्रों को प्रकाशित किया जाता है।

प्रधान सम्पादक
डॉ० (श्रीमती) [illegible] राजवंशी,
[illegible] कॉलिज, मेरठ
E-mail Id: shodhmanthaneditor@gmail.com
सम्पादकीय समिति
डॉ० [illegible] विश्वविद्यालय [illegible]
डॉ० [illegible] कॉलिज, मुरादाबाद, pustavishesh56@gmail.com
डॉ० [illegible] कॉलिज, [illegible]
[illegible]@gmail.com
डॉ० विनोद [illegible], हिन्दी विभाग, [illegible] महाविद्यालय, [illegible], vinod_kaira66@yahoo.com
डॉ० अनामिका [illegible] कॉलिज, [illegible], ngelanamika22@gmail.com
डॉ० पूजा [illegible] हिन्दी कॉलिज, मुरादाबाद, malina.pujakapoor@rediffmail.com
डॉ० [illegible] कॉलिज, [illegible], kamnaon478@gmail.com
[illegible] adhanyation@yahoo.com

शोध मंथन त्रि–मासिक जर्नल है।
शोध मंथन में पूर्व प्रकाशित लेख व पत्र प्रकाशित नहीं किये जाते।
शोध मंथन की प्रबन्ध सम्पादक पूर्व निर्धारित है। तथा समय अतिथि सम्पादक पदांकित किये जाते हैं।
प्रकाशित सामग्री का कॉपी राइट जर्नल अनु बुक्स, मेरठ का है।
अपना शोध पत्र प्रकाशित करवाने के लिये ई–मेल के द्वारा अपने पूर्ण पते के साथ भेजें
सम्पादकीय समिति का निर्णय अन्तिम होगा।
Authors are responsible for the cases of plagiarism.

Published by JOURNAL ANU BOOKS in support of
KAILBRI INTERNATIONAL EDUCATIONAL TRUST
Printed by D.K. Fine Art Press Pvt. Ltd., New Delhi.

हमारे यहाँ लेख प्रकाशित करने का कोई मूल्य नहीं लिया जाता है।

Subscription

In India	Rs 600.00 प्रति अंक	Rs. 2400.00 वार्षिक
Out of India	$ 60.00 प्रति अंक	$ 200.00 वार्षिक

Dr Swati Sharma
Deptt. of Music

2020-21 ①

ISSN (P): 0976-5255 (e): 2454-339x
Impact Factor 7.700 (SJIF)

शोध मंथन

हिन्दी शोध पत्रिका

A Peer Reviewed & Refereed International Journal in Hindi

Vol. XII No. 1 **Jan. - Mar. 2021**

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan

अनुक्रमणिका

1 भारत में नारीवादी सामाजिक रूपान्तरण की प्रक्रिया: ऐतिहासिक सन्दर्भ
डॉ० संजय कुमार पन्त 1

✓ ध्रुपद एक गायकी
डॉ० स्वाति शर्मा 12

3. मानसिक एवं बौद्धिक रूप से पिछड़े बालक – एक शोध
डॉ० सुमन शर्मा 17

4. गुरु नानकदेव जी का सामाजिक चिन्तन वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की आवश्यकता
डॉ० अमरजीत सिंह परिहार, सुनीता, डॉ० एच० के० त्यागी 24

5. गोरखपुर मण्डल उत्तर प्रदेश में पर्यटन उद्योग का विकास, समस्याएं एवं सम्भावनाएं
डॉ० विजय कुमार 30

6. मध्य हिमालयी रंग्या जनजातीय महिलाओं का सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक परिवेश
डॉ० निरंजना शर्मा 37

7. भारतीय समाज का संकट और मुक्ति के रास्ते
डॉ० माईकल 46

8. हिंदी–ग़ज़ल का कालपक्ष
डॉ० सुमन अग्रवाल 54

9. श्रीलंका का [illegible] में [illegible] का प्रभाव
डॉ० [illegible] एवं अनिता [illegible] 61

[illegible] Vol. XII No.1 Jan-March 2021 ISSN [illegible]
Available at: [illegible]

ध्रुपद एक गायकी

डॉ. स्वाति शर्मा
असि. प्रोफेसर, संगीत विभाग
[illegible] (पी.जी.) कॉलेज, मेरठ
Email: [illegible]@gmail.com

प्राप्ति [illegible].2021
स्वीकृत [illegible].2021

सारांश

[illegible]

प्रस्तावना

[illegible]

[illegible] Vol. XII No.1 Jan-March 2021 ISSN [illegible]
Impact Factor [illegible]

ध्रुपद गायन में राग नहीं छिपाया जाता है और न तानें ही ली जाती हैं। शब्दों को [illegible] स्वरों को गम्भीर और सही उच्चारण के साथ कहा जाता है। ध्रुपद में मुर्की, फंदा, [illegible] आदि नहीं होते हैं। ध्रुपद गम्भीर शैली है [illegible] स्वरों के लगाने में ही है। शब्दों को [illegible] ध्रुपद गायक का धर्म है। स्वरों और शब्दों को कहने के लिये लम्बी साँस की भी जरूरत [illegible] है।

ध्रुपद गायन शैली के लिए अधिकतर जिन तालों के नाम लिए जाते हैं, [illegible] जैसे चौताल, सूलताल, मत्तताल, झपताल [illegible] आदि तालें बजाई जाती हैं। इनके अतिरिक्त [illegible], लक्ष्मी ताल, मत्तताल, गणेश, शिखर, सवारी, रुद्र आदि भी ध्रुपद के अनुकूल ताले [illegible] परन्तु इन तालों में बहुत ही कम रचनाएँ दिखाई पड़ती हैं। [illegible] ध्रुपद गायकी के प्रमुख अंगों की जानकारी [illegible] 1. नोमतोम प्रधान आलापचारी या रागालाप, 2. बंदिश या पद गायन और 3. लयकारी।

इसके अतिरिक्त कुछ प्रमुख अंग हैं –

मींड – किसी स्वर से नीचे या ऊपर के दो तीन या अधिक स्वरों तक आवाज को बिना तोड़े हुए गाने की क्रिया [illegible]

[illegible]

Dr Seema Jain
Deptt of Zoology
2020-21

International Journal of Zoological Investigations Vol. 6, No. 2, 343-348 (2020)

International Journal of Zoological Investigations

Contents available at Journals Home Page: www.ijzi.net

IJZI

ISSN: 2454-3055

Comparative Study on DNA Quantification of Three Indian Major Carps of Middle Ganga Region

Rana Nisha[1]* and Jain Seema [2]

[1]School of Life Science and Technology, IIMT University, Meerut, India
[2]Department of Zoology, RGPG College, CCSU, Meerut 250001, India

*Corresponding Author

Received: 13th October, 2020
Accepted: 24th November, 2020
Published online: 23rd December, 2020

https://doi.org/10.33745/ijzi.2020.v06i02.014

Abstract: The present study was conducted on DNA extraction and determination of DNA quantity of both male and female of Indian major carps *Catla catla*, *Cirrhinus mrigala* and *Labeo rohita* collected from three different sites of western Uttar Pradesh, India. DNA was isolated and gel electrophoresis was carried out and extracted DNA was analyzed using Nanophotometer to determine the quantity of DNA and its purity level. A total of 90 samples were analyzed. The DNA content of *Catla catla* female was 62-80 ng/µl and of male was 71-84 ng/µl, of *Cirrhinus mrigala* female was 62-74 ng/µl and of male was 64-78 ng/µl and of *Labeo rohita* female was 59-68 ng/µl and of male was 66-74 ng/µl. For evaluation of interspecific variations, the DNA content variation among sex, type (species), site were analyzed using generalized linear model by the analysis of the content variation which was done using ANOVA (Univariate Analysis of Variance UNIANOVA using SPSS 20.0, Followed by Posthoc Duncan's Multiple Range Test) and showed significance at 1% level in all parameters (site, type, sex).

Keywords: DNA extraction, Indian major Carps, Nanophotometer, Interspecific variation

Citation: Rana Nisha and Jain Seema: Comparative study on DNA quantification of three Indian major carps of middle Ganga region. Intern. J. Zool. Invest. 6 (2): 343-348, 2020.
https://doi.org/10.33745/ijzi.2020.v06i02.014

Introduction

Fish are the most diverse group of living vertebrates, with more than approximately 32,500 species currently known and order Cypriniformes contains planets largest monophyletic group of freshwater fishes, with over 400 genera and 3000 species native to Asia, Europe, Africa and North America (Nelson, 2006). Fish has long been valued as a source of high quality animal protein and is relatively cheap for human nutrition.

Smt. Manisha Singhal
Chemistry

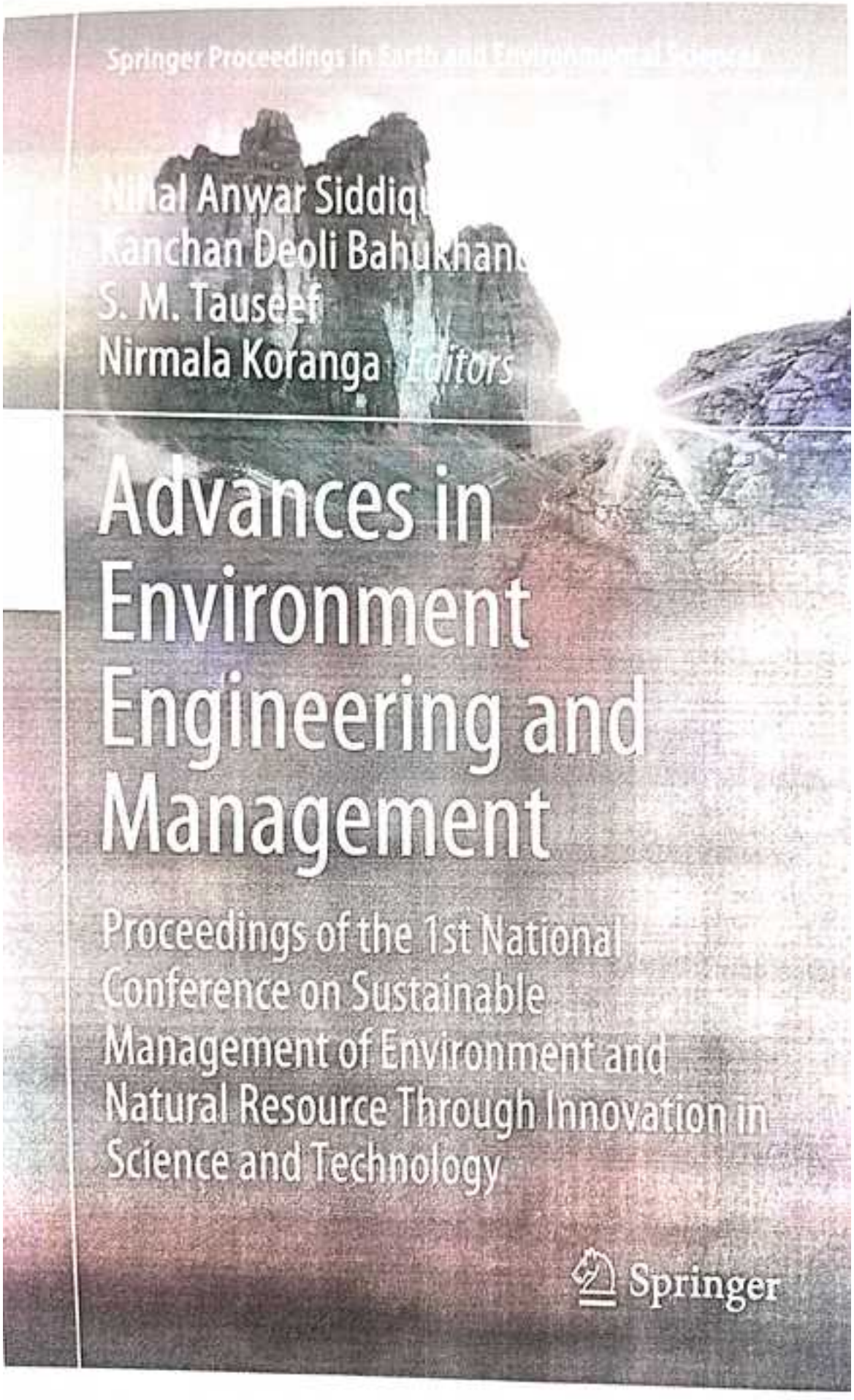

Editors
Nihal Anwar Siddiqui
University of Petroleum and Energy Studies
Dehradun, India

S. M. Tauseef
University of Petroleum and Energy Studies
Dehradun, India

Kanchan Deoli Bahukhandi
University of Petroleum and Energy Studies
Dehradun, India

Nirmala Koranga
DBS (PG) College
Dehradun, India

ISSN 2524-342X ISSN 2524-3438 (electronic)
Springer Proceedings in Earth and Environmental Sciences
ISBN 978-3-030-79064-6 ISBN 978-3-030-79065-3 (eBook)
https://doi.org/10.1007/978-3-030-79065-3

© The Editor(s) (if applicable) and The Author(s), under exclusive license to Springer Nature Switzerland AG 2021
This work is subject to copyright. All rights are solely and exclusively licensed by the Publisher, whether the whole or part of the material is concerned, specifically the rights of translation, reprinting, reuse of illustrations, recitation, broadcasting, reproduction on microfilms or in any other physical way, and transmission or information storage and retrieval, electronic adaptation, computer software, or by similar or dissimilar methodology now known or hereafter developed.
The use of general descriptive names, registered names, trademarks, service marks, etc. in this publication does not imply, even in the absence of a specific statement, that such names are exempt from the relevant protective laws and regulations and therefore free for general use.
The publisher, the authors and the editors are safe to assume that the advice and information in this book are believed to be true and accurate at the date of publication. Neither the publisher nor the authors or the editors give a warranty, expressed or implied, with respect to the material contained herein or for any errors or omissions that may have been made. The publisher remains neutral with regard to jurisdictional claims in published maps and institutional affiliations.

This Springer imprint is published by the registered company Springer Nature Switzerland AG
The registered company address is: Gewerbestrasse 11, 6330 Cham, Switzerland

Contents

Water Quality Assessment of Streams of Doon Valley Dehradun, Uttarakhand 1
Deepali Rana, S. K. Gupta, and Rahul Rana

Synthesis and Medicinal Importance of Benzoxazine, Benzoxazinone and Their Derivatives: A Short Review 13
Manisha Singhal and Vinay Prabha Sharma

A Review on Onshore Drilling for Oil and Gas Production with Its Safety Barriers and Well Control Methods 29
Aarushi, Akshi Kunwar Singh, and V. Venkata Krishnakanth

Cultivating Effectiveness and Efficiency Using 5S Methodology 41
Abhishek Nandan, Ankita Sharma, K. Praveen Kumar, Akshi K. Singh, and N. A. Siddiqui

COVID19: Impact on Environmental Parameters During the Lockdown Period in India 53
V. Balaji Venkateswaran and Devender K. Saini

Impact of Lockdown Due to COVID 19 Pandemic on Air Quality of Global Environment 65
Madhav Saket, Kanchan Deoli Bahukhandi, Siddiqui Nihal Anwar, Koranga Nirmala, Agrawal Shilpi, Singhal Shailey, and Vohra Shalini

Stress Condition Modeling to Optimize Mud Weight Window for Efficient Drilling 77
Dharmendra Kumar Gupta, Kamal Chandra Dani, and Pushpa Sharma

COVID-19 Fallout: India, Power Sector and Lockdown 91
Deepali Yadav and V. Balaji Venkateswaran

Assessing the Impact of Novel Coronavirus (COVID-19) on Renewable Energy Sector of India During the Lockdown 103
Deepali Yadav and V. Balaji Venkateswaran

Synthesis and Medicinal Importance of Benzoxazine, Benzoxazinone and Their Derivatives: A Short Review

Manisha Singhal and Vinay Prabha Sharma

Abstract The research in the pharmacology and medicine is in various ways related with synthesis of medicinally important new compounds. The structural basic skeleton of many drugs and compounds with biological activity contains heterocyclic ring with oxygen, nitrogen and sulphur. Benzoxazin, benzoxazinone and many other compounds having these skeleton are heterocyclic and are of great medicinal importance. The synthesis of benzoxazine, benzoxazinone and their derivatives has been able to draw attention of researchers due to their various medicinal uses and physiological activities. Chemically benzoxazine is a heterocyclic compound. It has an oxazine ring fused with a benzene ring. Oxazine ring is a six membered heterocyclic ring with oxygen and nitrogen atom. Benzoxazine and benzoxazinone are reported to exhibit many useful pharmacological properties including anti-inflammatory, analgesic, antifungal, neuroprotective, and antibacterial activities etc. This review is an attempt to throw some light on synthesis and biological activities of benzoxazines, benzoxazinones and their derivatives. This review motivates researchers to synthesize newer benzoxazine derivatives that can be found to be better drug than already available with lesser toxicity.

Keyword Benzoxazine · Anti-inflammatory · Analgesic · Antifungal · Antibacterial

M. Singhal (✉)
Department of Chemistry, RGPG College, Meerut, India

V. P. Sharma
Department of Chemistry, Meerut College, Meerut, India

© The Author(s), under exclusive license to Springer Nature Switzerland AG 2021

N. A. Siddiqui et al. (eds.), Advances in Environment Engineering and Management,
Springer Proceedings in Earth and Environmental Sciences,
https://doi.org/10.1007/978-3-030-79505-3_3

Multi-Disciplinary In...

E-ISSN 2349-9435

P-ISSN 2231-0045

This is to certify that the paper titled .... Synthesis [illegible] Studies of 2-(4-Hydroxyphenyl)-1,2-Dihydro-4H-Benzo[illegible]n-4-One

Authors	Designation	Department	[illegible]
Manisha Singhal	Assistant Professor	Chemistry	[illegible] College, Meerut [illegible]P, India
Vinay Prabha Sharma	Associate Professor	Chemistry	M[illegible] College, Meerut [illegible], India

has been published in our Peer Reviewed Inte[illegible] Journal

vol. ...9...... *issue* [illegible] *month* November *year* 202[illegible]

The mentioned paper is measured upto the required.

Dr Rajeev Misra
(Editor/Secretary)

E-14

[illegible] Tripathi
([illegible]-President)

14-02/0310/Deepak Sharma

Social Research Foundation

Non Governmental Organisation

128/170, H-Block, Kidwai Nagar, Kanpur - 208011

[illegible]

(P) ISSN : 2231-0045
(E) ISSN : 2349-9435

BI-LINGUAL QUARTERLY
RNI No. : UPBIL/2012/55438

VOL. 9, ISSUE - 2 November-2020

Periodic Research

Multi-disciplinary Peer Reviewed International Research Journal

Indexed-with Google Scholar

Indexed-with ROAD Directory of Open Access Scholarly Resources

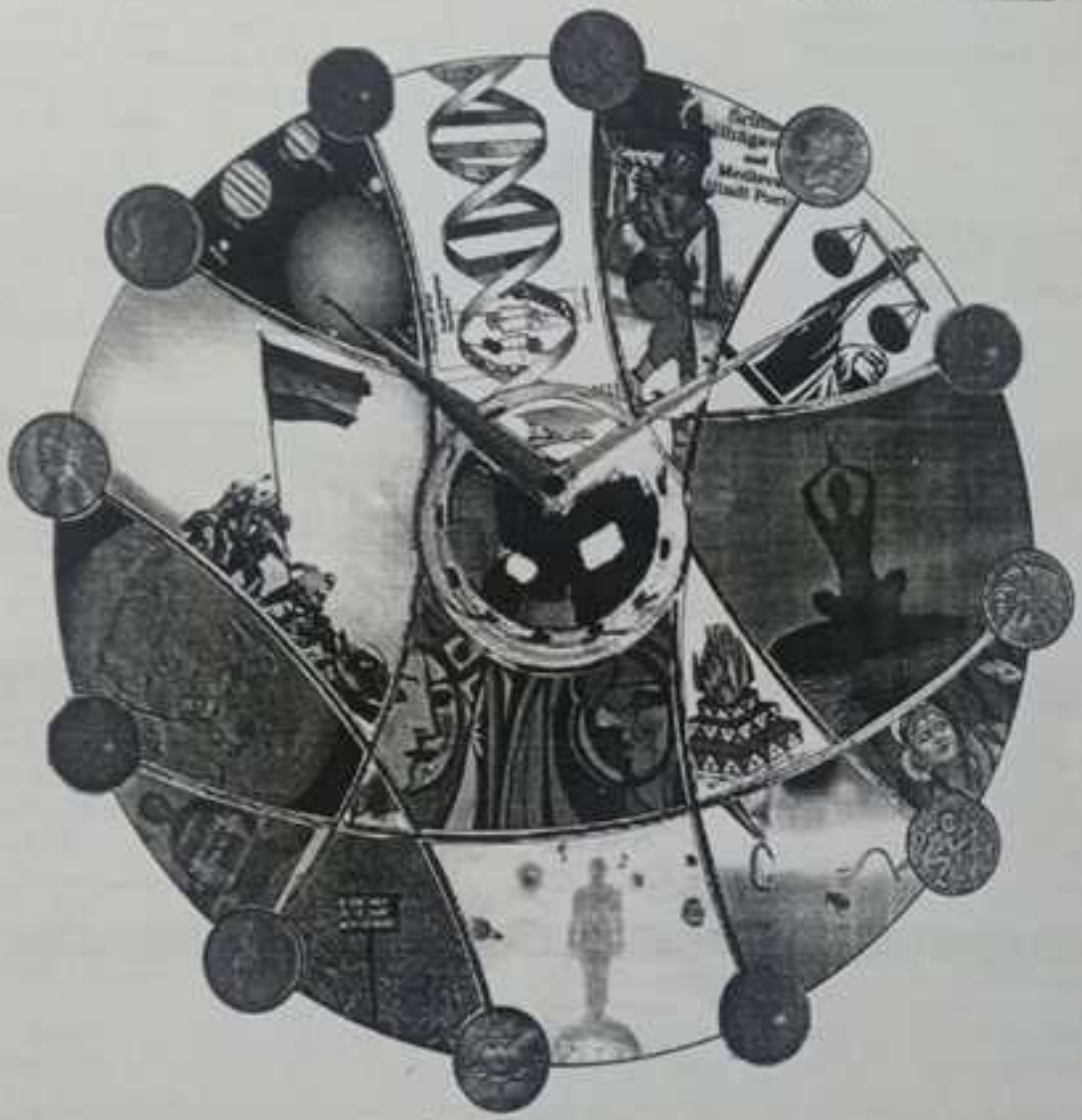

Impact Factor

SJIF = 4.463
evaluated by
Scientific Journal Impact Factor
SJIF (2020) = 7.147

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/20... VOL.-9, ISSUE-2 November -2020
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

13	Child Labour among Tribal Children of Pa... Interplay between Social and Economic Factors Narinder Singh, Ramgarh, Jammu, India	Sociology	E-79	E-84
14	Synthesis and Spectral Studies of 2-(4-Hydroxy... 1,2-Dihydro-4H-Benzo[d][1,3]Oxazin-4-One Manisha Singhal & Vinay Prabha Sharma, Meerut, U.P, India	Chemistry	E-85	E-88
15.	Investigation of Resistance Variability of Zigzag Carbon Nanotubes Using Various Parameters Hemendra Kumar, Shailendra Gangwar & Sanjeet Pratap Singh, Ghaziabad, Uttar Pradesh, India	Physics	E-89	E-92
16.	Thermal and Physical Properties of La3+ions doped Yttrium Zinc Lithium Soda Lime Borophosphate Glasses S.L.Meena, Jodhpur, Rajasthan, India	Physics	E-93	E-99
17.	A Study on Awareness about Labor Laws Among The Employees of APCO Infratech PVT. LTD, Lucknow (A Study of 50 Employees APCO Infratech Pvt. Ltd. Gomti Nagar, Lucknow) Geetanjali Srivastava, Prayagraj, UP, India	Social Work	E-100	E-106

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-9, ISSUE-2 November -2020
E: ISSN No. 2349-9435
Periodic Research

Synthesis and Spectral Studies of 2-(4-Hydroxyphenyl)-1,2-Dihydro-4H-Benzo[d][1,3]Oxazin-4-One

Paper Submission: 15/11/2020, Date of Acceptance: 26/11/2020, Date of Publication: 27/11/2020

Abstract

Benzoxazinone and its derivatives having it fused with other moieties like aromatic ring (Substituted phenyl) or heterocyclic systems (Chromone) were reported to possess many pharmacological activities like anti-inflammatory,antibacterial, analgesic etc. Inspired by this the title compound and some other derivatives of benzoxazinone were synthesised and studied for their spectral properties.

anisha Singhal
ssistant Professor,
ept. of Chemistry,
GPG College,
eerut, UP, India

inay Prabha Sharma
ssociate professor
ept. of Chemistry,
eerut College,
eerut, UP, India

Keywords: Benzoxazinone, anti-inflammatory,analgesic.

Introduction

The study of heterocyclic compounds is a field of interest for scientists for a long time [1].4H-3,1-benzoxazinone derivatives are recognised as an important heterocyclic compound for their numerous biological applications[2].It has been reported that 4H-3,1-Benzoxazinone derivatives possess various pharmaceutical activities like antibacterial, antifungal[3,4], antiphlogistic[5], anticancer[6], antianxiety[7], antiplatelet aggregation activity[8], antidiabetic activity[9], antihypertensive [10]etc.

Besides their pharmacological activities benzoxazin derivatives are also considered important because these compounds are not showing any reproductive toxicity, ulcerogenecity, ophthalmotoxicity, ototoxicity etc.[11,12].1,3-Benzoxazin-4-ones are also used in many fields such as research fields,Industries[13] and in clinical work[14].Benzoxazinones are also used as starting material for 4-quinazolone derivatives,that are used in many clinical work[15].Quinazoline-4-(3H)-one derivatives are reported to show many biological activities like anticancer,anti-inflammatory,antiviral,antifungal etc [16,17]. Chromones and their derivatives have also been recognised to be effective compounds to be used as anticancer agent[18,19],anti-inflammatory agent via inhibiting cyclooxygenase[20,21], lipooxygenase[22], diuretic[23,24] ,antibacterial[25] etc. Considering the biological activities of these compounds it was thought useful to synthesize compounds incorporating these systems.

Review of Literature

The isolation of 2,4-dihydroxy-7-methoxy-(2H)-1,4-benzoxazin-3(4H)-one (DIMBOA) and 2,4-dihydroxy-(2H)-1,4-benzoxazin-3(4H)-one (DIBOA) from plants of Poaceae family have attracted the attention of research scholars towards Compounds with a (2H)-1,4-benzoxazin-3(4H)-one skeleton. Many biological properties like antibacterial, antifungal, and insecticidal etc are exhibited by these compounds.Besides these properties benzoxazines are also used as monocomponent resins that are better substitute to already existing resins that use petroleum based raw materials.

Polybenzoxazines (PBz) have so many such properties that makes it useful for various applications [26]. Polybenzoxazines are having properties similar to phenolic or epoxy resins and along with these properties, possess many other unique properties like zero shrinkage upon polymerization and there is no need of Strong acid catalysts during their curing [27].

Benzoxazines monomers are anchored on many (bio)polymers as well as onto many macromonomers like lignin [28].

A new class of benzo[b][1,4] oxazin 3(4H)-one derivatives 1 was synlesised by [illegible] et al [29] These compounds were found to have Antifungal as well as cytotoxic activities.

Dr. Amita Sharma
Deptt. of Botany
2021

Journal of Medicinal Plants Studies
www.PlantsJournal.com

ISSN (E): 2320-3862
ISSN (P): 2394-0530
NAAS Rating: 3.53
www.plantsjournal.com
JMPS 2021; 9(1): 33-36
© 2021 JMPS
Received: 14-11-2020
Accepted: 21-12-2020

Amita Sharma
Associate Professor, Department of Botany, RGPG College, Meerut, Uttar Pradesh, India

Stuti Sharma
Intern, Acharya Vinoba Bhave Rural Hospital, Sawangi Meghe, Wardha, Maharashtra, India

Corresponding Author:
Amita Sharma
Associate Professor, Department of Botany, RGPG College, Meerut, Uttar Pradesh, India

Floral morphology and reproductive biology of medicinal plants: *Costus* (*Costaceae*)

Amita Sharma and Stuti Sharma

Abstract
Floral morphological studies were conducted on *Costus* pictus D. Don and *Costus* speciosus (Koening) sm, belonging to family *Costaceae*. Flowering period was found to be from May to November. Inflorescence was born on a leafy shoot at a terminal position in both the species. Colour of bract is green in C. pictus and dark red in C. speciosus. Extra floral nectary is present on the bracts in form of vertical dark lines. A single petaloid labellum, mono petaloid fertile stamen and inferior apparent 2- locular ovary in C. pictus and 3-locular ovary in C. speciosus are found. The thin and thread-like style is positioned between the thecae of the fertile stamen. Two lobed stigma bears appendages. Placentation is parietal in C. pictus and axile in C. speciosus. During the whole flowering period, ants were the only pollinators to visit the flower and inflorescence. The present study highlights the key for identification of the species and their pollinators.

Keywords: Appendage, bracts, *Costus*, inflorescence, ovary, petaloid

Introduction
The monocot family *Costaceae* belongs to order Zingiberales (Dahlgren *et al.* 1985) [5]. The genus *Costus* is the largest in the family with about 150 species tropical in distribution (Humphries 1985 and Hickey 1981) [10, 13]. The Shoot of *Costus* has a characteristic spiral monostichous phyllotaxy (Kirchoff and Rutishauser 1990) [17]. The floral structure of *Costaceae* is also unique in the order Zingiberales. Only a single fertile stamen develops while the infertile five stamens fuse to form a large, petaloid labellum that dominates the floral display (Kirchoff 1988; Troll 1928) [16, 32]. *Costus* igneosus is commonly known as fiery *Costus*, step ladder, spiral flag, crepe ginger or insulin plant. *Costus* pictus D. Donis commonly known as American insulin plant (Fig. 1 A). Medicinally C. pictus D. Don leaves are used to control the blood sugar level and C. speciosus (Koening) sm rhizome is used to control the sugar. C. speciosus (Koening) sm is native of Malaya Peninsula of South East Asia (Rani, *et al.* 2012) [22]. In India, it is found in Central India, western ghats of Maharashtra, Karnataka and Kerala. C. pictus D. Don is native to Mexico but introduced to India a few years back (Shiny, *et al.* 2016) [28]. For evolution and survival, reproduction is a natural process of increasing the number of individuals of the same species. Detailed knowledge of reproduction biology is required for successful cultivation and conservation of plants (Moza and Bhatnagar 2007) [20] and also for the study of the phylogeny. Due to a gap in the knowledge of reproductive biology of these two species, this work is carried forward. The present study provides a detailed account of the reproductive biology of two species of *Costus* in relation to floral morphology. Different parts of the *Costus* are used in treating various diseases. Active Phyto-constituent is Diosgenin. The rhizomes are bitter and used mainly for treating diabetes. They show anti-helminthic, astringent, expectorant properties. The extract of the rhizome is employed for treating burning sensation, constipation, leprosy, asthma, bronchitis, anaemia and other skin ailments (Bown Deni, 2008) [3]. Rhizomes of *Costus* are used as herbal remedies for fever and its paste is employed for treating boils. It is also used to make sexual hormones and contraceptives (Warrier *et al.*, 1994; Rastogi and Mehrotra, 1991) [23, 33]. Leaves are used for scabies and stomach ailments, Leaves are ground into a paste and applied to the forehead to bring down high fever. Besides rhizomes, stems also are used for treating blisters and burns. Roots are used against snakebite (Rathore and Khanna, 1978) [24]. *Costus* is traditionally used as a medicinal herb mainly for its tonic, stimulant, carminative, diuretic, digestive and antiseptic properties. The rhizome is used internally in the treatment of abdominal pain, chest pains, liver problems, jaundice, gall bladder pain etc.

Plants Journal

International Journal

PRINTED JOURNAL INDEXED JOURNAL

REFEREED JOURNAL PEER REVIEWED JOURNAL

Search articles

ISSN PRINT: 2394-0530, ISSN ONLINE: 2320-3862

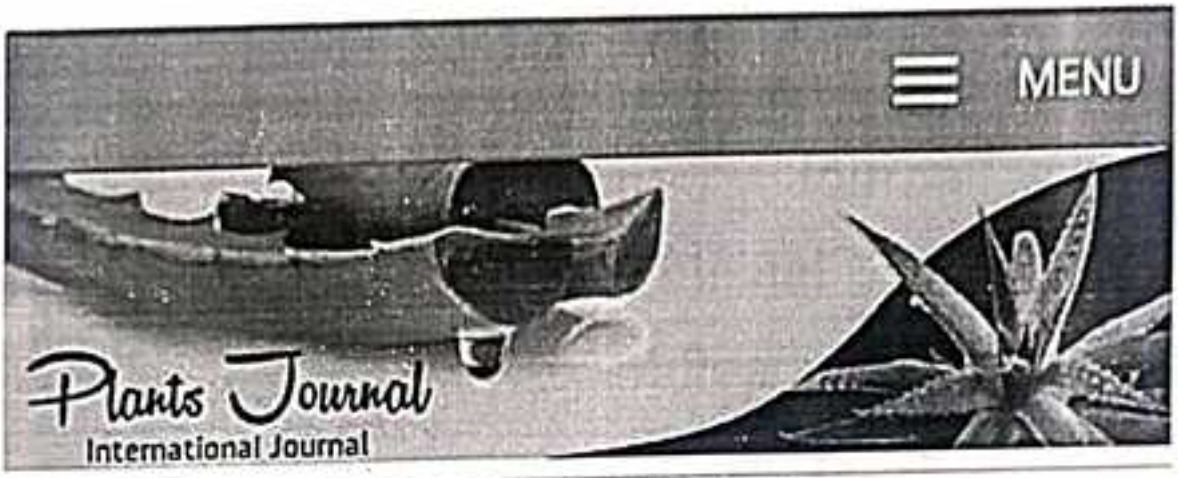

Journal of Medicinal Plants Studies

The Journal of Medicinal Plants Studies is a peer viewed journal. The prime focus of the journal is to publish articles related to

WhatsApp Enquiry

Dr. Amita - Botany
Deptt. of Botany
2021

J. Indian bot. Soc. e-ISSN 2455-7218, ISSN 0019 - 4468 Vol. 101 (1) 2021:16-30

IMMUNITY BOOSTER PLANTS FROM TRADITIONAL KNOWLEDGE IN NORTH INDIAN PLAINS TO MITIGATE COVID-19 INFESTATION

AMITA SHARMA AND SONIYA RANI

Department of Botany, R.G.(P.G.) College, Meerut- 250001, U.P., India.
Email-Id: amitarpgmrt2000@gmail.com
Date of online publication: 31st March 2021
DOI: 10.5958/2455-7218.2021.00009.7

As pandemic, COVID-19 continues to spread across the country, this is stressful for everyone. COVID-19 is an infectious disease caused by a novel Coronavirus (SARS-CoV-2) which affects the respiratory system in human beings with symptoms such as fever, cough, body pain, and difficulty in breathing in serious cases. It is a fact that prevention is better than cure and it is the first line of defence from infection. Traditional knowledge and practices which are very helpful to boost our body's immune system for the prevention of viruses are discussed in this paper. In this crisis, the traditional knowledge including culture and ethnomedicinal plants has long been and continues to be one of the strengths of indigenous communities. Further, many traditional healers, scientists, clinicians, experts have discussed various traditional herbs, which might be very effective against COVID-19. Ayurveda has spoken of very potent immune-booster plants such as *Allium sativum, Andrographis paniculata, Ocimum tenuiflorum, Tinospora cordifolia, Withania somnifera*,etc. These medicinal plants are also used in AIDS, respiratory diseases, influenza, and other viral diseases. In this paper, a total of 24 traditional medicinal plants have been discussed that play a key role to boost our defence system against novel coronavirus. The aim of this paper is to bring awakening in society for the adoption of indigenous traditional knowledge and researches to encourage preventive use of medicinal plants against COVID-19.

Keywords: COVID-19, Immune system, Indigenous, Medicinal plants, Traditional.

Coronavirus disease 2019 (COVID-19) as a life-threatening disease is caused by severe acute respiratory syndrome coronavirus 2 (SARS-CoV-2) that is accounted as a global public health concern (Mirzaie *et al.* 2020). The SARS-CoV-2 belongs to the subgenus Sarbeco virus and mostly resembles a bat coronavirus, with which it shares 96.2% sequence homology (Chan *et al.*2020). Like other coronaviruses, SARS-CoV-2 particles are spherical and have proteins called spikes protruding from their surface. These spikes latch onto human cells, then undergo a structural change that allows the viral membrane to fuse with the cell membrane. Coronaviruses cause a lot of disorders, including respiratory, enteric, hepatic, and neurologic diseases (Singhal 2020). Although the WHO said: "There is no specific medicine recommended to prevent or treat the novel coronavirus till now" (Prajapati *et al.* 2020). Natural plant products and their derivatives have potential activities in the treatment of viral infections (Denaro *et al.* 2020). Indian, Chinese, and Iranian traditional medicine, suggests some herbs for prevention, treatment, and rehabilitation of the diseases including COVID-19 (Mirzaie *et al.* 2020). Inhibition of viral replication is considered as a general mechanism of herbal extracts. The search for new compounds with antiviral activity has often been unsatisfactory due to viral resistance along with viral latency and recurrent infection in immune-compromised patients (Sumithira *et al.* 2012). The Ministry of Ayush, India has already released the self-care guidelines for preventive health measures and boosting immunity with special reference to respiratory health using traditional ayurveda and natural herbs (Ayush). The antiviral effects of medicinal plants have played a tremendous role at different stages of viral growth (Akram *et al.* 2018). The World Health Organization (WHO) reported that 4 billion people (80% of the world's population) use herbal medicines for some aspect of primary health care (Fabricat *et al.* 2001). Indian medicinal herbs are a promising field for the treatment of various illnesses (Gomathi *et al.* 2020). Medicinal plants have been recognized as potential drug candidates because they possess drug-like properties (Bernhoft 2010). Indian traditional medicine is one of the oldest treatments in human history and Ayurveda,

Received on December 24, 2020 www.indianbotanic.org Accepted on December 28, 2020

ISSN - 0019 - 4468, e-ISSN: 2455-7218

THE JOURNAL OF THE INDIAN BOTANICAL SOCIETY

VOL. 101 (1 & 2) 2021
www.indianbotsoc.org

Indexed in :
UGC - CARE

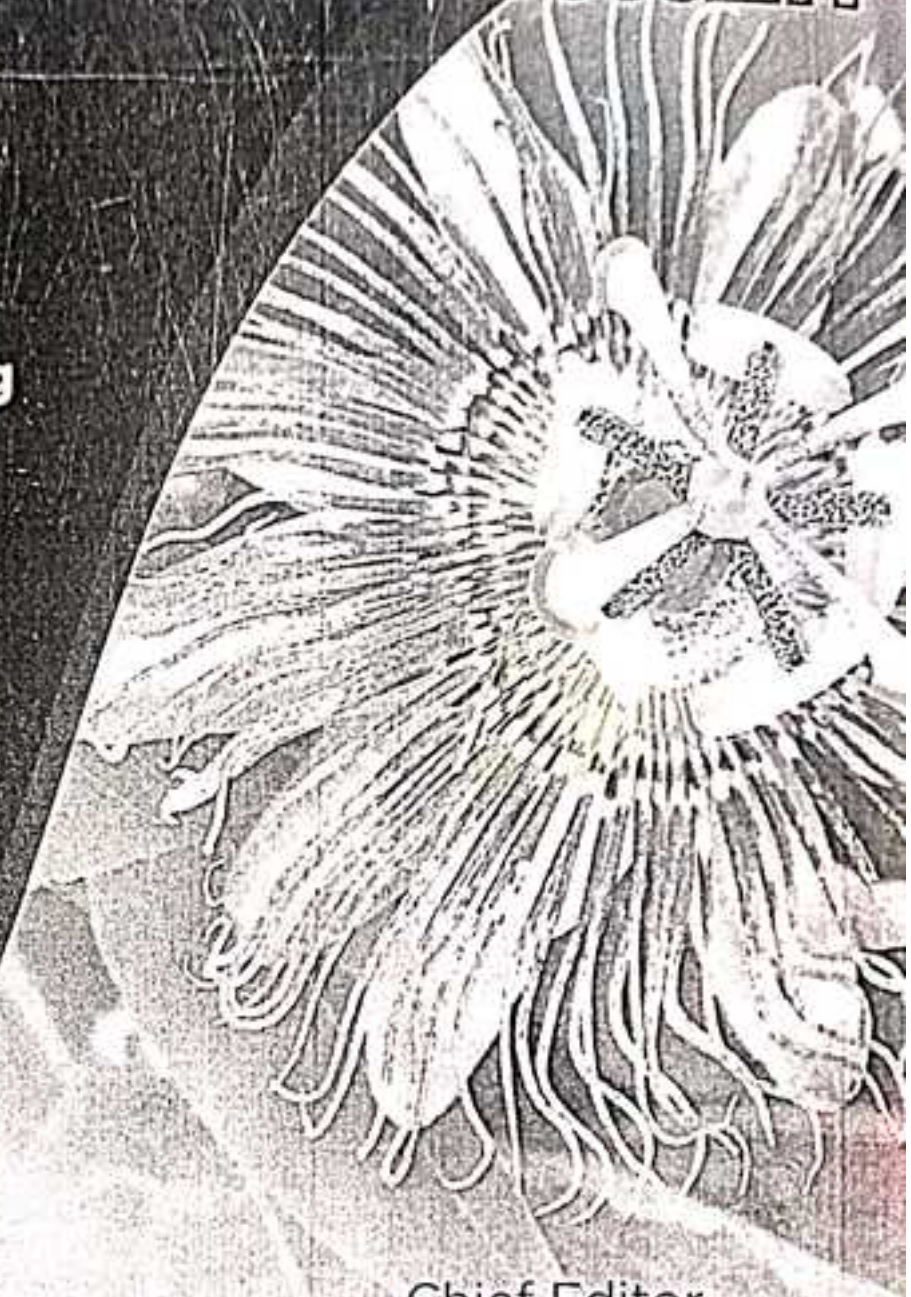

Chief Editor
Y. Vimala

Associate Editors
Nalini Pandey
R.K. Sharma

The Journal of the Indian Botanical Society e-ISSN:2455-7218, ISSN:0019-4468 Vol. 101(1&2): 2021
www.indianbotsoc.org

CONTENTS

Indexed in : UGC - CARE

Algal flora of tampara lake, Chhatrapur, Odisha, India
Soumya Ranjan Dash, Biswajita Pradhan, Chhandashree Behera, Rabindra Nayak and Mrutyunjay Jena 01-15

Immunity boosting plants from traditional knowledge in north indian plains to mitigate covid-19 infestation
Amita Sharma and Soniya Rani 16-30

Probing the phytotoxic effects of arsenic on growth and photosynthesis of *Solanum lycopersicum* L.
Shraddha Rai and Arvind Kumar Singh 31-39

Salicylic acid stimulates the biosynthesis of lignans in the cell suspension culture of *Gmelina arborea* roxb
Shilpa S. Madke, Konglanth J. Cherian and Rupesh S. Badere 40-48

Morphological and molecular identification of an endemic species from Tamilnadu, India: *Wrightia indica* ngan (apocynaceae)
Sathya Elavarasan, Muthulakshmipechiammal Pechimuthu, Rajendran Arumugam and Sekar Thangavel 49-57

In vitro organogenesis of *Trichosanthes Dioica* roxb. plantlets through callus culture
Rashmi Komal 58-65

Indigenous orchids and zingiberaceous taxa of Garo hills, Meghalaya
L. B. Sangma and A. K. Chaurasiya 66-73

Seedling morphology of some medicinal plants of convolvulaceae of Tripura, Northeast India
Rashmi Rani and B. K. Datta 74-81

Plants used for jaundice among the ethnic people of North Tripura district (Tripura), Northeast India
Dipan Sarma and Badal Kumar Datta 82-89

Rubisco: Structural and functional aspects with special reference to catalytic Imperfection
Ammir Hassan, Shamiya Hassan and Mohd Abdul Nasir 90-96

Utilization of hydrophyte growth promoting substances and its consequence on N.P.K. contents in lentil plant leaves
Amit Tiwari 97-102

Cytological studies of *Thevetia peruviana* L. and *Catharanthus roseus* L.
Dimple Sharma, Payal Soan and Seema Sharma 103-106

Algal diversity of saltpans, Humma (Ganjam), Odisha, India
Chhandashree Behera, Biswajita Pradhan, Roshni Rani Panda, Rabindra Nayak, Sneha Nayak and Mrutyunjay Jena 107-120

Diversity of ethnomedicinal plants of Kolhapur district, Western ghats
M. N. Patil and S. B. Patil 121-130

Floristic inventory of leafy vegetables with special reference to their ethnomedicinal uses in balasore district of Odisha, India
Niquehat Noor and Kunja Bihari Satapathy 131-139

Botany Deptt
R.G. P.G. College, Meerut

Bulletin of Environmental Contamination and Toxicology
https://doi.org/10.1007/s00128-021-03218-3

FOCUSED REVIEW

Implementation of Genetic Engineering and Novel Omics Approaches to Enhance Bioremediation: A Focused Review

Garima Malik[1] · Rahul Arora[2,3] · Ritu Chaturvedi[4] · Manoj S. Paul[4]

Received: 31 December 2020 / Accepted: 25 March 2021
© The Author(s), under exclusive licence to Springer Science+Business Media, LLC, part of Springer Nature 2021

Abstract
Bioremediation itself is considered to be a cost effective soil clean-up technique and preferred over invasive physical and chemical treatments. Besides increasing efficiency, application of genetic engineering has led to reduction in the time duration required to achieve remediation, overcoming the so called 'Achilles heel' of Bioremediation. Omics technologies, namely genomics, transcriptomics, proteomics, and metabolomics, are being employed extensively to gain insights at genetic level. A wise synchronised application of these approaches can help scrutinize complex metabolic pathways, and molecular changes in response to heavy metal stress, and also its fate i.e., uptake, transport, sequestration and detoxification. In the present review, an account of some latest achievements made in the field is presented.

Keywords Genetic engineering · Multi-omics · Bioremediation

Introduction

Exclusion or alleviation of the lethal effects of complex chemical compounds added to the surrounding environment by anthropogenic activities depends mainly on the biological systems. Bioremediation involves multidisciplinary approach including biosorption (metal sorption to cell surface by physicochemical systems), bioaugmentation (addition of microbes that have catabolic genes), biostimulation (organisms with elevated degradation capabilities are utilized to inoculate the polluted site), mycoremediation (use of fungi to solubilize, transform or uptake metal contaminants) and phytoremediation (plants are used to accumulate and metabolize toxic compounds in polluted areas). In current scenario, bioremediation via microbiological processes have the upper hand in degrading huge variety of pollutants such as heavy metal, petroleum, persistent organic pollutants, xenobiotics, and radionuclides, in terms of sustainability and unproblematic in-situ applicability. Recent advances in systemic biology and gene editing techniques for e.g., TALEN, CRISPR/Cas and ZFN have created the possibility to modify microbes to catabolize specific toxic compounds and eventually be applied in bioremediation process to tackle environment pollution challenge on a global scale. Omics studies (genomics, transcriptomics, proteomics, and metabolomics) assist the microbial systems biology research for exploring regulations at the molecular level for bioremediation and have introduced a wide perceptive of specific genes and proteins of microorganism, involved in degradation of pollutants in contaminated sites (Jaiswal et al. 2019; Pant et al. 2021).

Bioremediation Using Genetically Engineered Bacteria

Bacteria play vital role in treating the soil contaminated with toxic chemical pollutants via three main processes; mobilization, transformation and detoxification. The study of these mechanisms may unravel genetic factors controlling them and thereby could also be manipulated to be an asset in bioremediation processes overtime. A genetically engineered *Rhodopseudomonas palustris* strain was constructed to express mercury transport system and metallothionein concurrently for exclusion of mercury from heavy metal

✉ Ritu Chaturvedi
rituchaturvedi88@gmail.com

1 R.G. P.G. College, Meerut, U.P, India
2 The Francis Crick Institute, London, United Kingdom
3 Division of Biosciences, University College London, London, United Kingdom
4 Department of Botany, St. John's College, Agra, U.P, India

Published online: 10 April 2021